ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

चैत्र २०८१ अप्रैल २०२४

शुभमंगलमय नव संवत्सर
भारतीय नववर्ष मनोहर

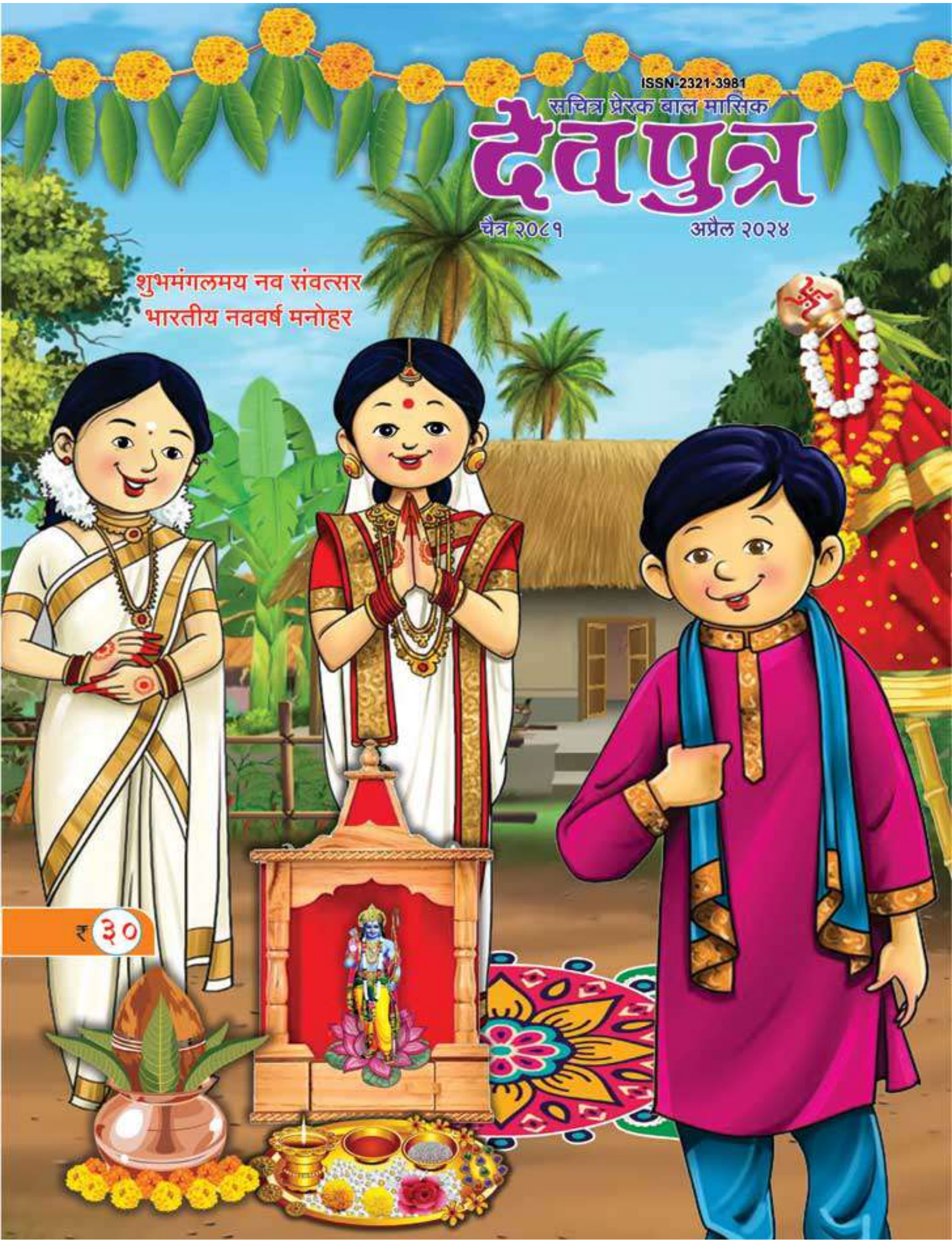

₹ ३०

कविता

नया वर्ष हो मंगलमय

समय न थमता, जल–सा बहता
रात और दिन अपने आप।
साल, महीने, मौसम इतने
आते जाते हैं चुपचाप।।

नदियाँ कल–कल झरने झर–झर
और फूल भी खिलें स्वयम्।
इसी तरह अपने कामों को
नियमित करते जाएँ हम।।

– राजा चौरसिया

खुशियाँ साझा करें परस्पर
भाईचारे की हो जय।
हर्ष और उत्कर्ष बढ़ाए
नया वर्ष हो मंगलमय।।

– कटनी (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

चैत्र २०८१ ▪ वर्ष ४४
अप्रैल २०२४ ▪ अंक १०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

२२ जनवरी २०२४ से भारतवर्ष में एक नए 'रामयुग' का आरम्भ हो चुका है। अयोध्यापुरी में अत्यन्त आनन्द के साथ श्रीरामलला की पुन: प्राण प्रतिष्ठा का अवसर जिनके जीवनकाल में प्राप्त हुआ ऐसे आप हम सब धन्यता अनुभव कर रहे हैं।

बच्चो! आपने भी एक गीत कई बार गाया होगा जिसकी रचना आचार्य रामनाथ 'सुमन' ने की थी, उसका ध्रुवपद है

चंदन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है।।

चंदन जैसी पवित्र माटी के इस देश में, तपस्या की भूमि जैसे ग्राम–ग्राम में, बच्चियाँ देवी और बालक राम हैं, ऐसी आदर्श भावना कवि ने की है।

श्रीरामलला का अयोध्या में प्रतिष्ठित स्वरूप भी तो पाँच वर्षीय बालक जैसा ही है। तो जितने आनंद से हमने श्रीरामलला की प्रतिष्ठा का महोत्सव गाँव–गाँव में मनाया। भारत का बच्चा–बच्चा श्रीराम के गुणों को, अपने मानस–मंदिर अर्थात् मन में, आचरण में धारण कर ले तो यह 'राम युग' सार्थक हो जाए। बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं यदि हर बच्चे राम के गुणों से युक्त होंगे तो 'रामराज्य' तो स्थापित होना ही है।

राम कभी झूठ नहीं बोलते, माता–पिता गुरु की सेवा करते हैं उनकी हर आज्ञा को मानते हैं, अपने भाइयों से अगाध प्रेम करते हैं। वे किसी भी सुख–दु:ख के अवसर पर धीरज नहीं खोते, उत्साह या शोक किसी भी अवसर पर मर्यादा नहीं छोड़ते। वे किसी विपत्ति किसी बाधा से कभी हार नहीं मानते। वन, पर्वत, नदियों, समुद्र, पशु–पक्षी वनचरों व समाज के प्रत्येक वर्ग से जातिपांति, धनी–निर्धन का भेदभाव किए बिना सबसे अपनत्व रखते हैं। दुष्टों को दण्ड देते हैं, सज्जनों की रक्षा करते हैं। ऐसे असंख्य गुण हैं श्रीराम में, इनमें से अंश मात्र भी हमारे जीवन में आ जाए तो हमारा हर नगर, हर ग्राम ही अयोध्या धाम बन जाए।

इस माह श्रीराम नवमी और उसी दिन श्रीरामचरित मानस की जयंती के अवसर पर आप सबके मानस में श्रीराम की प्राण–प्रतिष्ठा हो और प्रत्येक बच्चे के जीवन में रामयुग का नया संवत् आरंभ हो यही शुभकामना है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- नीले ग्रह की कहानी -महेश कुमार केशरी ०५
- संस्कारों की पाठशाला -डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा २२
- नीलू मास्टर -हरदेव चौहान ३२
- बंकी की शरारत -डॉ. के. रानी ३८

अनुवाद

- गुल्लक (सिन्धी) -डॉ. जेठो लालवाणी
  (अनुवादक) -डॉ. हुन्दराज बलवाणी २२

छोटी कहानी

- नन्हा-सा बागवान -मुग्धा पाण्डे २७
- बड़ी होकर..... -वीरेन्द्र बहादुर सिंह २९
- पिन्नी का चश्मा -इन्द्रजीत कौशिक ४०
- अनोखा जन्मदिन -हरीशचन्द्र पाण्डे ४७
- छोटे राजू के बड़े सपने -प्रगति त्रिपाठी ४९

आलेख

- हरिसिंह नलवा -डॉ. उमेश प्रताप 'वन्स' २०

प्रसंग

- डॉ. अम्बेडकर जी..... - २१

लघुकथा

- पूर्णता के लिए -संजीव कुमार 'आलोक' ४१
- मार्ग व भूल -राजेन्द्र निशेश ४४

कविता

- नया वर्ष हो मंगलमय -राजा चौरसिया ०२
- मैं राम हूँ -निखिलेश महेश्वरी ०८
- ऋतुचक्र -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' १६
- हिन्दू नववर्ष -कृष्ण 'शलभ' १७
- गमला मेरा -अनीता गंगाधर शर्मा ३४
- स्वस्थ रहेंगे -डॉ. श्रीकांत 'कौटिल्य' ४६

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' ११
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी १५
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २४
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल २५
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २६
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी २८
- आपकी पाती - ३०
- शिशुगीत -सुरेश सौरभ ३५
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ३६
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ४२
- छः अँगुल मुस्कान - ४८
- पुस्तक परिचय - ५०
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

बौद्धिक क्रीड़ा

- पैनी नजर -राजेश गुजर ३१
- बाल पहेलियाँ -व्यग्र पाण्डे ३६

चित्रकथा

- वजह -संकेत गोस्वामी १०
- नववर्ष का वादा -देवांशु वत्स ३७
- अनूठी वजह -देवांशु वत्स ४५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

– महेश कुमार केशरी

गगन और विशाल आपस में किसी बात पर उलझे हुए थे। तभी कक्षा में गौतम जी आये।

उन्होंने गगन और विशाल से उनके उलझने का कारण जानना चाहा और, पूछा– ''गगन और विशाल! आखिर तुम लोग किस विषय पर बातें कर हो?''

सोनू छठी कक्षा का एक बहुत ही होशियार बच्चा था। वह कक्षा प्रतिनिधि भी था। आज पहल सोनू ने ही की– ''आचार्यजी! ये लोग ब्रह्मांड के संबंध में बात कर रहे थे। ये कह रहे थे कि ब्रह्माण्ड बहुत से होते हैं और ये भी कह रहे थे कि हमारे सौर मंडल में बहुत सारे ग्रह हैं।''

सोनू की बात सुनकर गौतम जी पहले तो मुस्कुराये। फिर बोले– ''अच्छा! तो ये बात है। मुझे ये जानकर बहुत अच्छा लगा कि तुम लोगों को विज्ञान बहुत पसंद है। दरअसल बच्चो! विज्ञान और विशेषकर खगोल विज्ञान बच्चों के लिये ही नहीं बल्कि वैज्ञानिकों के लिये भी शुरू से एक आश्चर्य और चुनौतियों से भरा विषय रहा है। वस्तुत: खगोल विज्ञान और खासकर हमारा ब्रह्मांड तरह–तरह के आश्चर्यों से भरा पड़ा है। हमारा ये संपूर्ण ब्रह्मांड ग्रहों–तारों, नक्षत्रों, उल्काओं, से घिरा हुआ है। हमारा ब्रह्मांड बहुत ही विशाल है। इसकी कोई सीमा नहीं है। ब्रह्मांड, गैलेक्सी, आकाशगंगा और मंदाकिनी सारे नाम एक ही हैं। इनको ही हम आकाशगंगा, गैलेक्सी, मंदाकिनी, या ब्रह्मांड के नाम से जानते हैं। आकाशगंगा या ब्रह्मांड एक ही चीज है। बस इनके नाम अलग–अलग हैं। आकाश गंगा के अंदर ही ग्रह, नक्षत्र, उल्कापिंड, धूमकेतु आदि पाये जाते हैं। 'बिग बैंग' की घटना के बाद हमारा ब्रह्मांड लगातार फैलता ही जा रहा है। आने वाले समय में ये लगातार और भी विस्तार पाएगा है। इसके तारों, ग्रहों, नक्षत्रों, उल्काओं की खोज करना बहुत ही मुश्किल काम है। हम खगोल विज्ञान के बारे में जितनी आसानी से सोच लेते हैं। वस्तुत: वो उतना आसान नहीं है। जैसे–जैसे हम ग्रहों के बारे में नक्षत्रों के बारे में पढ़ते हैं। हम भौचक से रह जाते हैं। कुछ तो ग्रहों नक्षत्रों के ऊपर शोध करने के कारण, और कुछ अबूझ और रहस्यमयी आश्चर्यों के कारण भी वैज्ञानिकों के लिये खगोल विज्ञान कौतूहल का विषय बना हुआ है।''

अब कक्षा में एक सन्नाटा फैल गया था। सभी बच्चे गौतम जी की बातों को बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे। आज खासकर गौतम जी के कारण वे एक अनोखी और रहस्यमयी दुनिया की यात्रा पर निकल पड़े थे।

एक छात्र दीपक ने गौतम जी से पूछा– ''आचार्यजी! तारे बड़े होते हैं या ग्रह? आचार्यजी! तारों और ग्रहों के बारे में कुछ बताइये।''

गौतम जी पुन: तारों और ग्रहों के बारे में बताने लगे– ''बच्चो! तारे वस्तुत:, हमारे ग्रह पृथ्वी से भी बहुत बड़े होते हैं। लेकिन, चूँकि वे हमारे नील ग्रह पृथ्वी से बहुत ही दूरी पर स्थित हैं। इसलिये हमें बहुत ही छोटे दिखाई देते हैं।

कई–कई तारे तो हमारे पृथ्वी से दसियों गुना बड़े हैं। इतने बड़े की उनमें हमारी जैसी दस पृथ्वियाँ भी समा जाएँ। हमारा सूर्य भी एक तारा है। जिसको की एक मध्य आयु का तारा माना गया है। लेकिन, सूर्य अपनी आयु का लगभग पचास प्रतिशत भाग जी चुका है। लेकिन, तब भी सूर्य की अभी बची हुई आयु करोड़ों साल की है। सूर्य के कारण ही हमारी पृथ्वी पर जीवन संभव है।

अगर सूर्य न हो तो हमारी पृथ्वी पर जीवन का कोई चिह्न नहीं होगा। हमारा सूर्य दरअसल एक तारा है। सैकड़ों सालों से जल रहा है। उसके तेजी से जलने के कारण ही हमें और हमारी पृथ्वी पर उपस्थित पेड़–पौधों को, पशु–पक्षियों को ऊष्मा मिलती है।''

तभी, एक दूसरे छात्र राकेश ने गौतम जी से पूछा– ''आचार्यजी! क्या सूर्य भी एक दिन समाप्त हो जायेगा? और हमारी पृथ्वी और हमारा ब्रह्माण्ड भी एक दिन नष्ट हो जायेंगे? क्या सूर्य जितनी ऊर्जा प्रदान करने के लिये हम कोई यंत्र नहीं बना सकते? क्या सूर्य का कोई विकल्प नहीं है?''

राकेश के प्रश्न पर गौतम जी मुस्कुराये– ''नहीं सूर्य का कोई विकल्प नहीं है। पृथ्वी पर जीवन जैसे पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों और स्तनपायियों जैसे हम मनुष्यों के अलावा भी सभी का पृथ्वी पर जीवन इस सूर्य के कारण ही संभव है। सूर्य नहीं होगा तो पौधे नहीं होंगे पौधे नहीं होंगें। तो हम मनुष्यों और जीव–जंतुओं को भोजन कैसे मिलेगा? पृथ्वी पर जीवन दो ही चीजों के कारण संभव हो पाता है। पहला, जल के कारण और दूसरा सूर्य के कारण। तुम लोगों ने प्रकाश–संश्लेषण के बारे में तो पढ़ा ही होगा। हमारे पेड़–पौधे, सूर्य के प्रकाश के कारण ही भोजन बना पाते हैं। प्रकाश–संश्लेषण के कारण ही पेड़–पौधों का उत्तरोत्तर विकास होता है। इस प्रकार पेड़ों से हमें घर और खाना बनाने के लिए लकड़ियाँ मिलतीं हैं। बगैर सूर्य के धरती पर जब पौधे ही नहीं रहेंगें, तो सोचो जीवन कैसे होगा? इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ हमें अपने पेड़ों को कटने से बचाना चाहिए। हमें अपनी

नदियों को साफ रखना चाहिये। सूर्य में जो ऊर्जा बनती है वह ''नाभिकीय विखंडन'' और फिर ''नाभिकीय संलयन'' जैसी कठोर और जटिल रासायनिक प्रक्रियाओं के कारण ही संभव हो पाती है। जिसमें से इतनी ऊर्जा निकलती है, कि उतनी पृथ्वी पर पैदा हो सके ऐसा संभव ही नहीं है।

देखो बच्चो! हर चीज की एक आयु होती है। हमारे सूर्य, पृथ्वी और इस पूरे ब्रह्मांड की भी एक आयु है। तय आयु के बाद हर चीज नष्ट हो जाती है। वैसे ही हमारा नीला ग्रह पृथ्वी, सूर्य, और एक दिन हमारा समूचा ब्रह्मांड भी नष्ट हो जायेगा। लेकिन, ये सब एक दिन में नहीं होगा। इसको होने में अरबों वर्ष लगेंगे। तब तक हम लोग नहीं रहेंगे। हम उस घटना से अरबों वर्ष पहले नष्ट हो चुके होंगे।''

सुमन ने गौतम जी से पूछा– ''आचार्यजी! पृथ्वी के अलावा और कौन–कौन से ग्रह हैं, जहाँ पर जीवन पाया जाता है? क्या हमारे नीले ग्रह पृथ्वी के अतिरिक्त भी किसी और ग्रह पर जीवन उपस्थित है? या हमारे जैसे मनुष्य उपस्थित हैं?''

गौतम जी! बच्चों की जिज्ञासा शांत करते हुए बोले– ''देखो, बच्चो! अभी हमारे लिये ये कहना बहुत ही जल्दबाजी होगी कि पृथ्वी के अतिरिक्त किसी और ग्रह पर जीवन के संकेत हैं या नहीं। वैज्ञानिक निरंतर शोध कर रहे हैं और इस बात का पता लगाने के लिये प्रयासरत हैं कि कहीं किसी और ग्रह पर भी जीवन पाया जाता है या नहीं। कुछ वर्षों के बाद मंगल ग्रह पर बस्ती बसाने की बात चल रही है। यही बातें पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा को लेकर चल रही है। लेकिन, वैज्ञानिकों के लिये चुनौती ये है कि मंगल ग्रह या चन्द्रमा पर सबसे पहले ऑक्सीजन और दूसरी चीज पानी का होना आवश्यक है। जब तक ये चीजें नहीं मिल जातीं। किसी ग्रह पर बस्ती या घर नहीं बनाया जा सकता। या, यूँ कह लीजिए कि आज की तिथि में पृथ्वी को छोड़कर कहीं जीवन संभव ही नहीं है।''

''तब, तो हमारी पृथ्वी बहुत ही अनमोल स्थान है, आचार्यजी!'' गगन और विशाल एक साथ बोल पड़े।

''हाँ बच्चो! जिस तरह से साल–दर–साल हमारे पेड़ कटते जा रहे हैं और ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन लगातार बढ़ता जा रहा है। अच्छे और साफ पानी की उपलब्धता हमारे लिये एक चुनौती से कम नहीं है। बच्चों अगर इस नीले ग्रह को हमें बचाना है। तो प्रदूषण को समाप्त करना होगा और अनेक पेड़ लगाने होंगे।'' कक्षा के सभी बच्चे एक साथ और एक स्वर में बोल पड़े– ''हाँ! आचार्यजी! हम सब पेड़ लगायेंगे। और अपनी पृथ्वी को बचायेंगे।''

– बोकारो (झारखंड)

मैं राम हूँ

मैं राम हूँ
वही राम हूँ जो त्रेता में जन्मा,
दशरथ, कौशल्या के आँगन खेला,
लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का भाई,
कौशल देश का प्यारा,
अवध का राजकुमार,
हाँ मैं वही राम हूँ।।१।।

वही जो विश्वामित्र को मन भाया,
जन दर्शन को भ्रमण कर आया,
ढेर ऋषि–हड्डियों का देख जागा,
धनुष उठा की थी प्रतिज्ञा,
निशिचर हीन करहुँ मही,
हाँ मैं वही राम हूँ।।२।।

वही जिसे बनना था अयोध्या का राजा,
पिता वचन हेतु राज्य ठुकराया,
चौदह वर्ष वनवास पाया,
रघुकुल रीत को निभाया,
रघुकुल नंदन कहलाया,
हाँ मैं वही राम हूँ।।३।।

वही जिसने बचपन में कि लीला,
किया था धनुष शिव का भंग,
स्वयंवर में बना विजेता,
जो वर लाया सीता,
बन गया सीताराम,
हाँ मैं वही राम हूँ।।४।।

वही जो वन–वन भटका बन संन्यासी,
केवट की नाव में बैठने वाला,
मैंने निषाद को गले लगाया,
झूठे बैर शबरी के खाये,
सुग्रीव को मित्र बनाया,
हाँ मैं वही राम हूँ।।५।।

वही राम जिसका भक्त हनुमान,
गिद्ध को दिया पिता का स्थान,
विभीषण को राजा बनाया,
जिसने समुद्र को झुकाया,
सेतु लंका तक पहुँचाया,
हाँ मैं वही राम हूँ।।६।।

वही राम जिसने रावण को मारा,
मैंने ही कुंभकर्ण का किया नाश,
मिटाया दशानन का अहंकार,
कर पृथ्वी राक्षसविहीन,
पुरी की अपनी प्रतिज्ञा,
हाँ मैं वही राम हूँ।।७।।

वही जो सीता लेकर लौटा अयोध्या,
जिसके लौटने पर मनी दीवाली,
जिसका पा जनता थी हर्षायी,
मेरा हुआ राज्याभिषेक,
राज्य बना रामराज्य,
हाँ मैं वही राम हूँ।।८।।

वही जो बना हिन्दू स्वाभिमान, मर्यादा,
भारत की श्रद्धा आस्था का प्रतीक,
जिसके कारण जनता हुई जाग्रत,
अयोध्या में, मैं हूँ विराजित,
दर्शन कर बहे अश्रुधारा,
हाँ मैं वही राम हूँ।।९।।

– निखिलेश महेश्वरी,
भोपाल (म. प्र.)

वजह
चित्रकथा-
सत्य ही स्वर्ग का मार्ग है..
एक मुहल्ले में महात्मा जी का प्रवचन हो रहा था-
अब कृपया वे लोग हाथ उठाएं जो स्वर्ग जाना चाहते हैं..
हरिप्रसाद को छोड़कर सबने हाथ उठाए.
क्या बात है भक्त? क्या तुम स्वर्ग नहीं जाना चाहते?
नहीं महाराज. क्योंकि आपसी वैर-भाव रखने वाले ये सब लोग यहां से चले जाएंगे तो मेरे लिए तो यहीं स्वर्ग हो जाएगा.

हरिकृष्ण देवसरे

बाल साहित्य के महारथी डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

प्रस्तोता –
डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे को हिंदी बाल साहित्य का महारथी कहना चाहिए, बाल साहित्य के सृजन, संपादन, शोध और आलोचना : हर क्षेत्र में उन्हें महारत प्राप्त थी। वे अपने समय से आगे के लेखक थे। उन्होंने बहुत लिखा और बहुत अच्छा लिखा। जो लिखा, खूब सोच समझ कर लिखा। यही कारण है कि उनका प्रदेय मील के पत्थर की तरह है।

९ मार्च १९३८ को उनका जन्म सतना (मध्य प्रदेश) की नागोद तहसील में प्रसिद्ध लेखक इकबाल बहादुर देवसरे और सुमित्रा देवसरे की संतान के रूप में हुआ। १९५१ से वे बाल साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुए तो आजीवन अपने योगदान से उसे अभिसिंचित करते रहे। बाल साहित्य के नन्हें से पौधे को उन्होंने वट वृक्ष का रूप दिया। हिंदी में उन्होंने पहली बार जबलपुर विश्वविद्यालय से १९६८ में बाल साहित्य पर पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त की।

बच्चों के लिए उन्होंने तीन सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं उनकी पुस्तक सफेद रसगुल्ले १९५४ में प्रकाशित हुई। उनकी चर्चित पुस्तकों की सूची बहुत लम्बी है– नए परीलोक में, नया पंचतंत्र, घना जंगल डॉट काम, हरिकृष्ण देवसरे की चुनिंदा बाल कहानियाँ, गधे की हजामत, घंटे वाले बाबाजी, हैलो बीरबल, मीठे–मीठे साथी, खरबूजे ने बदला रंग, मेरी प्रिय कहानियाँ, उलूक पुराण, राजा भोज की कहानी, रोमांचक कहानियाँ, संपूर्ण बाल विज्ञान कथाएँ, सचित्र बाल कहानियाँ, मैं पढ़ नहीं सका, बच्चा लोग ताली बजाओ, सुनहरी किरनें, तुम डाल–डाल हम पात–पात, विज्ञान के रत्न, भारतीय गणितज्ञ, कहानी हर रंग की, नन्हें हाथ खोज महान, जिनकी पूजा होती है, अकबर बीरबल की प्रामाणिक कहानियाँ, आओ चंदा के देश चलें, एक और भूत, सुरखाब के पर, चुटकुलानगर, लावेनी, मंगल ग्रह पर राजू, दूसरे ग्रहों के गुप्तचर, डॉ. बोमा की डायरी आदि।

उनका लेखन वैज्ञानिक सोच पर आधारित था। उनके अनेक बाल धारावाहिक दूरदर्शन पर प्रसारित हुए, जिनमें आजादी की कहानी, छुट्टी का दिन, छोटी सी बात, कैसे बने मुहावरे, कैसे बनी कहानी, सौ बातों की एक बात, देखा–परखा सच, हमारे राष्ट्रीय चिह्न आदि विशेष चर्चित रहे। १९८४ से १९९१ तक वे पराग पत्रिका के संपादक रहे। इसके संपादन के लिए उन्होंने आकाशवाणी की सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। पराग ने उनके संपादन में अपना अद्वितीय स्थान बनाया। बालसाहित्य आलोचना की दिशा में उनका प्रशंस्य योगदान है। 'हिंदी बाल साहित्य : एक अध्ययन, (शोध प्रबंध), 'बाल साहित्य : रचना और समीक्षा '(सम्पादित), 'हू इज हू आफ इंडियन चिल्ड्रन्स राइटर्स' उनकी मानक कृतियाँ हैं।

उनके संपादन में 'बच्चों की सौ कविताएँ', 'बच्चों के सौ नाटक', प्रतिनिधि बाल नाटक, हमारा नाटक, 'बच्चों की सौ कहानियाँ', 'हेंस एण्डरसन की कहानियाँ' (दो भाग), 'ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ' (दो भाग), 'भारतीय बाल कहानियाँ' जैसे ऐतिहासिक महत्व के संकलन प्रकाशित हुए।

१४ नवम्बर २०१३ को नयी दिल्ली में उनका देहांत हो गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी एक प्यारी–सी कहानी

घंटियाँ

''टिर्रन्...टिर्रन्...टिर्रन्...टिर्रन्...

प्रकाश खीझकर उठा और टाइम पीस को तकिए के नीचे दबाकर लेट गया; कानों के इर्दगिर्द रजाई अच्छी तरह लपेट ली, जिससे घंटी की आवाज बिलकुल न सुनाई दे पर नींद उचट चुकी थी। मन ही मन अपनी दीदी को कोसने लगा, जो रोज रात को उसे सुबह उठकर पढ़ने की शिक्षा देती हैं। न जाने किस समय वह ही चुपके से घड़ी में अलार्म लगाकर रख जाती हैं और प्रकाश को मजबूर होकर उठना ही पड़ता है। अभी शायद पौ फटी होगी कि कमरे के बाहर दीवार पर लगी कॉल बेल बज उठी। प्रकाश चिंहुक उठा। उसने सोचा कि इस कॉल बेल को भी वह आज उखाड़कर फेंक देगा। इस रामू के बच्चे को कितनी बार समझाया कि दूधवाले के आने से पहले ही उठकर दरवाजे पर खड़ा हो जाया कर, पर यह भी कॉल बेल बजने पर ही उठता है। प्रकाश को लगा जैसे सब लोग हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गए हैं।

किसी तरह इधर–उधर करवट बदली कि तब तक पिताजी ने अपना जाप शुरू कर दिया ''हरे कृष्ण गोविंद हरे मुरारे...'' उन्हें भी न जाने क्या आदत है जो मुँह अँधेरे ही उठकर नदी–स्नान को चले जाते हैं और आकर भजन–पूजन में लग जाते हैं। प्रकाश को उनके भजन–पूजन से चिढ़ नहीं है, चिढ़ है उस गिलास के साइज की घंटी से, जिसे वह जोर–जोर से हिलाकर भजन गाते हैं, समझ में नहीं आता कि क्या भगवान भी बिना घंटी बजाए नहीं जागते! आज सुबह से ही प्रकाश झुंझलाया हुआ था। दीदी ने पूछा– ''सुबह उठे थे?''

वह बरस पड़ा ''दीदी, मैं अब इतना छोटा नहीं हूँ कि मुझे तुम रोज–रोज एक ही बात कहो।''

इस उत्तर से दीदी का नाराज हो जाना भी स्वाभाविक ही था। वह बिना उनकी ओर देखें बाथरूम में चला गया।

खाना खाकर जैसे ही वह किताबें इकट्ठी करने लगा कि बैठक में लगी दीवाल घड़ी जैसे उसे ही सुनाने के लिए दस का घंटा बजा बैठी। उसका मूड फिर बिगड़ गया। आज फिर पहले पीरियड में लेट पहुँचने पर शास्त्रीजी अपनी गोल–गोल आँखों से उसे घूरेंगे। न जाने क्यों वह समझने की कोशिश नहीं करते कि देर–सवेर तो सभी के साथ होती है।

वह साइकिल पर सवार होकर चला जा रहा था कि झट गाँव का एक आदमी उसके सामने आ गया। बड़ी मुश्किल से वह कतराकर साइकिल निकाल ले गया, पर उसकी कुहनी गाँव वाले से टकरा गई।

''दिखाई नहीं देता क्या?'' गाँव वाला बड़बड़ाया ''तुम्हें नहीं दिखाई देता और मुझे कहते हो...''

''क्या मेरे पीछे आँखें हैं? साइकिल में घंटी क्यों नहीं लगवा लेते? उसे बजा दो, तो सामने वाला हट जाए। भला उसे क्या मालूम कि पीछे से....।''

और प्रकाश तेजी से पैडिल घुमाता आगे निकल गया। गाँव वाले के मुँह से भी घंटी का नाम सुनकर उसका जी चाहा था कि उसका मुँह नोच ले।

रास्ते में कुछ दोस्त मिल गए। उनके साथ भी दस-पंद्रह मिनट लग गए। शाला पहुँचा, तो मनकीराम चपरासी दूसरे पीरियड का घंटा बजा रहा था। उसे लगा कि यह चपरासी भी उसका शत्रु है। अवश्य उसने उसे देखकर ही घंटा बजाया है। और फिर कम्बख्त बजाता भी कितनी जोर से है जैसे सभी बहरे हों।

कक्षा में पहुँचा, तो भटनागर साहब नहीं आए थे। उन्हें शायद प्रयोगशाला होकर आना था। वह आए, तो हाथ में पीतल की एक घंटी लेकर आए।

आज 'ध्वनि' के संबंध में पाठ था। पूरे पीरियड में वह धातु तथा उस पर किए जाने वाले आघात के कारण होने वाली ध्वनि तथा उसके कंपनों की भौतिक-शास्त्रीय जानकारी देते रहे और प्रकाश अपना माथा पकड़े बैठा रहा। बीच-बीच में जब वह उदाहरण देने से लिए टन से घंटी बजाते, तो वह चौंक उठता, जैसे किसी ने उसकी कनपटी पर चांटा मारा हो। और वह तिलमिलाकर रह जाता।

पूरा दिन उसने कैसे बिताया, उसकी स्वयं समझ में नहीं आया। सातवें पीरियड की प्रतीक्षा ही उसका एक मात्र सहारा था। पर सातवां पीरियड जैसे रबड़ बन गया था। वह बार-बार कलाई घड़ी की सुइयों को देखता। कभी सोचता शायद हेडमास्टर के कमरे की घड़ी ठीक नहीं है। शायद मनकीराम ऊंघ रहा होगा। किसी तरह जब जोर-जोर से टन्न्... टन्न्... घुट्टी की घंटी बजी तो उसे चैन मिला कि चलो अब यहाँ की घंटी से तो मुक्ति मिली।

घर वापस जाते समय उसे लगा कि बड़ी जोर-जोर से घंटियाँ बजाती हुईं कुछ मोटर गाड़ियाँ पीछे से आ रही हैं। वह एकदम सड़क छोड़कर किनारे हो गया। देखा कि एक के पीछे एक, फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ चली आ रही हैं। जब फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ उसके पास से गुजरीं, तो इतनी तेजी से घंटियों का स्वर उसके कानों में घुसा कि उसका मस्तिष्क सुन्न पड़ गया। उसे पल भर लगा कि वह बहरा हो गया है। भारी मन से वह धीरे-धीरे घर की ओर चला। चाहता तो था उधर चलकर देखें कि आग कहाँ लगी है, पर सिर फटा जा रहा था। घंटियों की आवाजों ने उसके दिमाग की नसों में पंक्चर कर दिया था।

घर पहुँचा, तो उसकी आँखें बुरी तरह जल रही थीं। दीदी ने माथे पर हाथ रखा, तो बुखार से वह तप रहा था। फौरन प्रकाश की बीमारी का समाचार घर में फैल गया। माँ ने आकर बिस्तर पर लिटा दिया और उसका सिर सहलाने लगी। पिताजी ने थर्मामीटर

लगाकर देखा बुखार चार को पार कर पाँच डिग्री को छूना चाहता था। दीदी ने तुरंत डॉक्टर आने के लिए फोन कर दिया।

प्रकाश अपनी सारी सुधबुध खो बैठा था। तेज बुखार में वह हाथ-पैर पटक रहा था। बीच-बीच में बड़बड़ा उठता ''घंटी घंटी.... घंटी बजी.... बंद करो उसे... बंद करो.... दीदी.... अलार्म... मनकीराम... भटनागर साहब.... घंटी.... घंटी....।''

डॉक्टर ने देखा। दवा दी। फिर बोले- ''लगता है, यह किसी बात से बहुत परेशान है। यह 'घंटी-घंटी' क्यों चिल्ला रहा है?

''डॉक्टर साहब, इसे सुबह उठाने के लिए अलार्म लगाती हूँ। यह उठना नहीं चाहता। इसे घंटियों से ही न जाने क्यों चिढ़ हो गई है। सुबह दूधवाला घंटी बजाता है, तब भी रामू पर बिगड़ता है कि दूधवाले से पहले ही जाकर दूध क्यों नहीं ले लिया। बताइए, भला घंटी भी कोई ऐसी चीज है जिससे चिढ़ा जाए?'' दीदी ने कहा।

डॉक्टर गंभीर होकर कुछ सोचते रहे। इस बीच प्रकाश उसी तरह बड़बड़ाता रहा। डॉक्टर उठे और पिताजी को बाहर ले गए। पता नहीं क्या बातें कीं।

प्रकाश का बुखार उतरा, तो पिताजी ने कहा- ''बेटे! आज शाला मत जाना। हम लोग शाम को कहीं बाहर चलेंगे।''

और शाम की गाड़ी से सभी लोग शिमला चले गए। उन्होंने एक ऐसा बंगला लिया, जो बिलकुल शहर के किनारे पर था। बिलकुल सुनसान, कहीं कोई आवाज नहीं। दिनभर, रातभर सब उसी में रहते।

प्रकाश वहाँ एक हफ्ते में ही ऊब गया। सभी बातों का क्रम बिगड़ गया था। कभी शाम को ही खाना हो जाता, कभी देर रात तक बातें होती रहतीं। पिताजी जानबूझकर कलाई घड़ी घर पर छोड़ आए थे। कुछ समझ में ही न आता था कि कब कितना बजा है। प्रकाश को लगने लगा कि वह जैसे ढीला हो गया है और सब कुछ बेवक्त करता है।

आखिर तंग आकर एक दिन वह बोला- ''यहाँ से चलिए, पिताजी, मन नहीं लगता। कब क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता।''

पिताजी मुस्कुराए। बोले, ''तबियत तो ठीक है?''

''हाँ।'' प्रकाश ने कहा, ''पर लगता है अगर ऐसे ही रहा, तो फिर बीमार हो जाऊँगा। यहाँ तो कुछ काम ही नहीं है।''

''इसीलिए आदमी के लिए यह बहुत जरूरी है कि वक्त की कीमत को पहचानें। कब क्या करना चाहिए, कितनी देर में करना चाहिए, यह जानना बहुत जरूरी है। अगर आदमी यह जानना बंद कर दे, तो उसकी जिंदगी का कोई ठिकाना नहीं कि वह कब क्या करेगा। छोटी-छोटी चिड़ियों को देखो, वे भी समय से उठती और सोती हैं। आदमी ने अपने समय का हिसाब रखने के लिए घड़ियाँ बनाई हैं और समय से सजग रहने के लिए घंटी बजती है। जो तुम्हें चेतावनी दे, सजग बनाए, उससे चिढ़ना कैसा? अगर तुम नहीं चाहते, तो तुम उसे मिटा सकते हो, पर यह तो सोच लो कि क्या उसके बिना तुम रह सकते हो?'' पिताजी ने समझाया।

प्रकाश उत्तर में मुस्करा दिया। बोला- ''पिताजी! अब मैं खुश हूँ। मेरी तबियत भी अच्छी है चलिए, घर चलें, वरना पढ़ाई का बहुत नुकसान होगा।''

और प्रकाश लौट आया। घंटियाँ पहले जैसी ही बजती रहीं, पर प्रकाश अब उनसे चिढ़ता नहीं, खुश होता है- यह सोचकर कि वे उसे पढ़ने के लिए कहती हैं, वे उसे लेट होने से बचाती हैं।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

पाण्डवों की वारणावत यात्रा

– मोहनलाल जोशी

दुर्योधन ने धृतराष्ट्र से कहा– पिताजी! वारणावत में उत्सव होने वाला है। आप एक वर्ष के लिए पाण्डवों को वहाँ भेज दें। मैं उनको बहुत–सा धन देकर मित्र बना लूँगा। फिर पाण्डव आ गये तो भी मेरा राज रहेगा।

धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा– पुत्र! तुम सभी भाई वारणावत चले जाओ। अपनी माता कुन्ती को भी साथ ले जाओ। वहाँ बड़ा उत्सव है। एक वर्ष पश्चात् लौट आना।

युधिष्ठिर वारणावत जाने के लिये तैयार हो गये। वह बड़े पिता की आज्ञा का पालन करता था। विदुरजी दुर्योधन की दुष्टता समझते थे। उन्हें पता लग गया था कि दुर्योधन पाण्डवों को जलाकर मार देगा। विदुर ने गुप्त भाषा में युधिष्ठिर को संकेत किया कि आग लगे तो चूहा बिल में चला जाता है। पाण्डव माता कुन्ती के साथ वारणावत चल दिये।

लाक्षागृह

दुर्योधन का एक घनिष्ठ मित्र था। उसका नाम विरोचन था। दुर्योधन ने विरोचन को वारणावत भेजा। वह पाण्डवों से पहले वारणावत पहुँच गया। विरोचन ने वहाँ पर एक बड़ा महल बनवाया। महल दिखने में बहुत सुन्दर और आरामदायक था। परन्तु उसकी दीवारें 'लाख' की बनी थी। महल में सारी सामग्री शीघ्र जलने वाले पदार्थों की थीं।

विरोचन ने पाण्डवों को उस महल में ठहराया। पांडव एक वर्ष तक वारणावत रहे। इस बीच विदुर ने एक खन्दक भेजा। उसने महल से निकलने के लिए सुरंग बना दी एक दिन पांडव उस महल को आग लगाकर चले गये। विरोचन महल में भस्म हो गया।

पांडव सुरंग के रास्ते दूर जंगल में चले गये। किसी को भी पता नहीं लगा। दुर्योधन ने सोचा– पांडव मर गये हैं। धृतराष्ट्र ने पांडवों का श्राद्ध तर्पण करवा दिया।

हिडम्ब का वध और घटोत्कच का जन्म

पाण्डव और माता कुन्ती वारणावत से निकल गये। वे हस्तिनापुर से दूर अज्ञात स्थान जाने लगे। रास्ते में घने जंगल थे। एक रात्रि उन्होंने एक पेड़ के नीचे विश्राम किया। भीम जागकर सबकी रक्षा कर रहा था। शेष चारों भाई और माता कुन्ती सो रहे थे।

तभी वहाँ एक राक्षसी आयी। उसका नाम हिडिम्बा था। वह हिडम्ब की बहन थी। हिडम्ब मनुष्यभक्षी था। राक्षसी पाण्डवों को मारने आयी थी। परन्तु वह भीम पर मोहित हो गयी। उसने भीम से विवाह करने का कहा। भीम ने मना कर दिया।

तभी हिडम्ब भी आ गया। भीम और हिडिम्ब में भयंकर युद्ध हुआ। कुन्ती व शेष पाण्डव भाई जाग गये। कुछ ही देर में भीम ने हिडम्ब को मार दिया। हिडिम्बा ने माता कुन्ती से प्रार्थना की। भीम से मेरा विवाह करवाओ। माता ने आज्ञा प्रदान की हिडम्बा से भीम का घटोत्कच नामक पुत्र हुआ।

– बाड़मेर (राज.)

ऋतुचक्र

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', – लखनऊ (उ. प्र.)

भारतवर्ष में छः ऋतुएँ हैं, ऋतु को मौसम भी कहते।
ऋतुओं के रंग न्यारे-न्यारे, जिसमें हम सब हैं रहते।

एक वर्ष में मास हैं बारह
छः ऋतुओं के दो-दो मास।
ग्रीष्म, वर्षा, शीत नाम से
तीन प्रमुख ऋतुओं का वास।

चैत्र और बैशाख मास तक
कहलाता ऋतुराज 'वसंत'।
फसल, पौध, फल-फूल हैं खिलते
शीतकाल का होता अंत।

जेष्ठ-आषाढ़ में 'ग्रीष्म' ऋतु हो
पड़ती है तब भीषण गर्मी।
शीतल छाँव में सुख मिलता है
आँधी, लू करती हठधर्मी।

श्रावण-भादों मासों में ही
ऋतुओं की रानी 'वर्षा' आती।
रिमझिम-रिमझिम पानी बरते
भू पर हरियाली है छाती।

आश्विन से कार्तिक मास तक
'शरद' ऋतु का होता है काल।
निर्मल नभ दिखलायी देता
शीतल हवा दिखाती चाल।

मार्गशीर्ष से पौष मास तक
ऋतु कहलाती है 'हेमंत'।
वातावरण सुहाना होता
गर्मी का हो जाता अंत।

माघ से फाल्गुन मास शिशिर का
इसमें होता भीषण शीत।
पेड़ों में पतझड़ होता है
कोहरा, गलन करे भयभीत।

होता है ऋतुचक्र अनूठा
देती प्रकृति हमें सुख-कष्ट।
प्राणी मौसम को यदि सह ले
कभी न आशा-बल हो नष्ट।

कविता

हिन्दू नववर्ष

– कृष्ण शलभ
सहारनपुर (उ. प्र.)

नये वर्ष में क्या करना है, तय कर लें हम, आज अभी से।

आज अभी से तय करना है–
नहीं सुनेंगे वही कहानी!
जिसे सुनाती आयी नानी,
जिसमें कोरी गप्प भरी है।
सुन कर गुड़िया जिसे डरी है,
जिसमें कोई ज्ञान नहीं है!
ज्ञान नहीं, विज्ञान नहीं है,
धरती कैसी, क्या है पानी!
सुननी हमको नई कहानी,
बात करेंगे नई सदी से–
नये साल में क्या करना है–
तय कर लें हम आज अभी से!

आज अभी से तय करना है, हमको जीना प्रेम प्यार में
हँस कर फूलों–सा बहार में, खिलते हुए सुगंध लुटाना
संग हवा के बहते जाना, दीवाली, होली के मेले
देखो ना पड़ जाये अकेले, है सारी धरती अपना घर
होता बड़ा प्यार का सागर, कैसे सागर तक जाना है
हम सीखेंगे सुनो नदी से, नये साल में क्या करना है
तय करलें हम आज अभी से,

आज अभी से तय करना है
अपनी मुट्ठी में होगा कल
थिरकेगा जीवन का हर पल
खुशियों की बाँसुरी बजेगी
अपनी दुनियाँ तब चहकेगी
गूँजेंगे फिर नये तराने
बढ़े चलेंगे बढ़े चलेंगे
नई राह पर सीमा ताने
दीवाने हाँ हम दीवाने
बात करेंगे सुनो सभी से
नये साल में क्या करना है
तय करलें हम आज अभी से!

आज अभी से तय करना है, बापू के बंदर–सा बनना,
अपने मन से छोड़ बुराई, सम्प्रदाय, मत बाद की बातें
पहले है सब भाई–भाई, हो आपस में भाईचारा
नहीं रहे संकल्प हमारा, खुशहाली धरती पर नाचे
उन्नत हो यह देश हमारा, यही कोशिशें रहें हमारी
हम बच पायें सदा बदी से, नये साल में क्या करना है–
तय करलें हम आज अभी से,

गुल्लक

मूल कहानी – डॉ. जेठो लालवाणी
अनुवाद – डॉ. हुंदराज बलवाणी

आज सोनू जैसे ही शाला से घर लौटा, उसका चेहरा उदास था। घर पहुँचते ही उसने अपनी अलमारी और खिलौनों के थैलों में कुछ ढूँढ़ना शुरू किया। नानी ने सोनू से हाथ–मुँह धोकर नाश्ता करने का कहा। हर रोज जैसे ही वह शाला वेन से उतरता था तब हँसता हुआ दूर से ही नानी को आवाज देता था– ''नानी नानी नाश्ता दो भूख लगी है।'' घर में प्रवेश करते ही वह शाला का बस्ता एक तरफ तो बूट–जुराबें दूसरी तरफ फेंककर हाथ–मुँह धोने चला जाता था और फिर नाश्ते के टेबल पर आकर बैठ जाता था।

आज उसे नाश्ते की कोई चिंता नहीं थी। घर में प्रवेश करते ही घर में उथल–पुथल मचा दी। वह घर की सारी चीजें–कपड़े, पुस्तकें कौए इधर–उधर फेंकने लगा।

नानी ने नाश्ते के लिए दो–बार आवाज दी लेकिन उसने अनसुनी कर दी। नानी चलकर देखने आई कि आखिर माजरा क्या है? पूछा– ''क्या ढूँढ़ रहे हो? नाश्ता क्यों नहीं करते?''

सोनू गुस्से में बोला– ''मेरा गुल्लक कहाँ है?''

''यहीं कहीं होगा। नाश्ता कर ले, फिर ढूँढ़कर देते हूँ।''

''नहीं मुझे गुल्लक अभी चाहिए.... मैंने यहीं रखा था। किसने लिया है?'' सोनू वह कहते–कहते गुल्लक ढूँढ़ता रहा।

वैसे तो सोनू बहुत ही सयाना और समझदार था। पढ़ाई में भी आगे था। हमेशा हँसता–खेलता रहता था। नानी का लाड़ला था। उनका कहा कभी नहीं टालता था लेकिन आज वह नानी की बात भी नहीं सुन रहा था।

अब नानी भी सोनू का गुल्लक ढूँढ़ने में लग गई। लेकिन गुल्लक जाने घर से छूमंतर हो गया था।

सोनु को खिलौनों का शौक था। वह हर बार महँगे खिलौनों के लिए जिद करता रहता था। नानाजी उसे बहुत प्यार करते थे। इसलिए उसकी हर इच्छा पूरी करते थे। लेकिन कुछ दिन नये खिलौनों से खोलकर वह ऊब जाता था। सोनू में एक खूबी अवश्य थी। वह यह कि खिलौनों से अकेले खेलना उसे अच्छा नहीं लगता था। पास–पड़ोस के बच्चों को बुलाकर उनके साथ खेलने में उसे मजा आता था।

आज भी कुछ दोस्त उसके पास आए लेकिन उनके साथ खेलने का उसका मूड नहीं था इसलिए सभी वापस चले गए।

पिछले दिनों वह नानाजी के साथ बाजार गया था। वहाँ उसने एक कम्प्यूटर गेम देखा था। सोनू ने वह दिलवाने की जिद की। लेकिन गेम बहुत महँगा था। नानाजी ने उसे बहुत समझाया कि ऐसी महँगा गेम हम नहीं खरीद सकते परन्तु सोनू माने तब न! वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। आखिर जब नानाजी ने उसकी

जिद मानी तब जाकर खुश हुआ। नानाजी बोले– ''पर एक शर्त है।''

''हाँ हाँ, बोलिए, गेम के लिए मैं आपकी हर शर्त मानने के लिए तैयार हूँ।''

उस दिन नानाजी एक गुल्लक ले आए थे और कहा था– ''तुझे जो जेब खर्च मिलता है वह इस गुल्लक में डालना होगा। एक महीने के बाद हम गुल्लक खोलेंगे। तब जमा हुई राशि में से तुझे गेम खरीदकर दूँगा। अगर पैसे कम हुए तो मैं उनमें अपनी ओर से भी जोड़ दूँगा।'' और सोनू ने उसमें जेब खर्च डालना शुरू किया था।

इस बात को केवल दो सप्ताह ही हुए थे। गेम के लिए गुल्लक एक महीने के बाद खोलने की शर्त थी पर गुल्लक उससे पहले ही गायब हो गया था। जहाँ रखा था वहाँ नहीं मिल रहा था।

सोनू ने अपनी नानी से मोबाइल लिया। पिताजी के नंबर उसे याद थे। फोन करके पिताजी से भी पूछ लिया लेकिन पिताजी को भी गुल्लक के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। आखिर सोनू थक गया और मुँह फुलाकर सो गया।

शाम को सोनू की माँ आई। उनसे भी सोनू ने गुल्लक के बारे में पूछा। माँ को तो गुल्लक के बारे में पता ही था क्योंकि उसने ही अलमारी में कपड़ों के बीच छुपाकर रखा था। सोनू के सिर से बड़ा बोझ उतर गया। और माँ ने गुल्लक निकालकर हाथ में पकड़ाया तो उसके चेहरे पर चमक आ गई।

माँ बोली– ''क्या करोगे गुल्लक का? अभी आधा ही तो भरा होगा। नानाजी से तुमने एक महीने के बाद खोलने का वादा किया है। गेम तुझे एक महीने के बाद ही मिलेगी। तो फिर इस तरह परेशान होने का क्या फायदा?''

सोनू ने माँ और नानी की ओर देखा और अपने हाथ में मजबूती से पकड़ा हुआ गुल्लक माँ को देते हुए रोकर कहने लगा, ''माँ! तुझे पैसे चाहिए न यह ले लेकिन पिताजी को पुलिस के हवाले मत करना। पुलिस पिताजी को मारेगी।''

माँ और नानी को आश्चर्य हुआ। ''यह तू क्या बोल रहा है बेटा? पिताजी को पुलिस क्यों पकड़ेगी? उन्होंने तो ऐसा कोई काम किया नहीं है।''

सोनू कहने लगा, ''कल रात को माँ, पिताजी को कह रही थी कि उन्होंने अलमारी में से जो उनके पैसे लिये हैं वह कल तक नहीं लौटाएँगे तो वह पुलिस में फरियाद करेगी।''

यह सुनकर माँ जोर–जोर से हँसने लगी– ''तो यह बात है? अरे पगले मैं तेरे पिताजी को सचमुच थोड़ी कह रही थी। मैं उनके साथ मजाक कर रही थी। अब पता चलता है कि बच्चों के आगे मजाक में भी कोई बात नहीं कहनी चाहिए। मजाक में की गई बात को भी बच्चे सही मान लेते हैं। क्षमा करना बेटा! अब कभी ऐसा कुछ नहीं बोलूँगी। तू यह गुल्लक अपने पास रखा। एक महीने के बाद उसे खोलेंगे। और आज शाम को पिताजी के साथ बाहर घूमने चलेंगे।''

अब सोनू का चेहरा खिलने लगा था।

– अहमदाबाद (गुजरात)

हरिसिंह नलवा

– डॉ. उमेश प्रताप वत्स

एक बार महाराजा रणजीत सिंह जंगल में शिकार खेलने गये। कुछ सैनिकों सहित हरि सिंह भी उनके साथ थे तभी अचानक एक विशालकाय बाघ ने उन पर हमला कर दिया। सभी सैनिक डर के मारे पीछे हो गए। तभी हरिसिंह बाघ के सामने आ गए। हरि सिंह व बाघ का जबरदस्त मुकाबला हुआ। अंत में इस खतरनाक मुठभेड़ में हरिसिंह ने बाघ के जबड़ों को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर उसके मुँह को बीच में से चीर डाला। उसकी इस बहादुरी को देखकर रणजीत सिंह के मुख से अचानक ही निकल गया– ''अरे! तुम तो राजा नल जैसे वीर हो।'' राजा नल पुराणों में वर्णित एक प्रतापी राजा थे।

तभी से उनके नाम में नलवा जुड़ गया और वे सरदार हरिसिंह नलवा कहलाने लगे।

हरिसिंह नलवा का जन्म २८ अप्रैल १७९१ को एक सिक्ख परिवार में गुजरांवाला पंजाब में हुआ था। इनके पिता का नाम गुरदयाल सिंह उप्पल और माता का नाम धर्मा कौर था। बचपन में उन्हें घर के लोग प्यार से हरिया कहकर पुकारते थे। सात वर्ष की आयु में इनके पिता का देहान्त हो गया था।

महाराजा रणजीतसिंह ने १८०५ ई. के बसन्तोत्सव पर एक प्रतिभा खोज प्रतियोगिता आयोजित की। जिसमें हरिसिंह ने भाला चलाने, तीर चलाने तथा अन्य प्रतियोगिताओं में अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इससे प्रभावित होकर महाराजा रणजीत सिंह ने उन्हें अपनी सेना में भर्ती कर लिया। अपनी बहादुरी व समझ के कारण शीघ्र ही वे महाराजा रणजीत सिंह के विश्वासपात्र सेना नायकों में से एक बन गये।

उनको कश्मीर का राज्यपाल बनाकर भेजा गया वहाँ की स्थिति देखकर वे हैरान हो गए, उनके अंदर गुरु गोविन्द सिंह का संस्कार और वीर बंदा बैरागी का रक्त था। वे पहले ऐसे हिन्दू वीर सेनापति थे जो ईंट का जवाब पत्थर से देना जानते थे।

'शठे शाठ्यम् समाचरेत' जो जैसा होता है उससे वैसा ही व्यवहार करते थे। महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति के रूप में उनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। कश्मीर घाटी में पहुँचते ही मुगलों ने जिन मंदिरों को ढहाकर मस्जिद बनाई थी, हरिसिंह नलवा ने उसी स्थान पर पुन: मंदिरों को निर्माण कराया।

उन्होंने आदेश जारी किया कि हिन्दुओं की तरह मुसलमानों से भी टैक्स लिया जाय। उन्होंने मुसलमान बन चुके सैकड़ों बंधुओं की घर वापसी भी की। जिससे बिना किसी संकोच के बड़ी संख्या में लोगों की घर वापसी होने लगी, लेकिन हिन्दुओं की नासमझी और रूढ़ियों के कारण ऐसा न हो सका। आज उसका परिणाम कश्मीरी पंडित झेल रहे हैं।

१८३७ में जामरोद पर अफगानों ने आक्रमण किया। रणजीत सिंह के बेटे का विवाह लाहौर में था हरिसिंह पेशावर में बीमार थे। आक्रमण का समाचार सुनते ही वे जामरोद पहुँचे।

जबरदस्त मुकाबले के बाद अफगानी सैनिक पराजित हो भाग निकले नलवा और सरदार निधन सिंह उनका पीछा करने लगे। रास्ते में सरदार शम्सखान एक घाटी में छिपा हुआ था। घाटी में पहुँचते ही नलवा पर आक्रमण हुआ और हरिसिंह नलवा को धोखे से पीछे से गोली मार दी। इसके बाद भी हरिसिंह दुश्मनों से लड़ते रहे जब वे जामरोद पहुँचे

तो उनका निष्प्राण शरीर ही घोड़े पर था।

महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में १८०७ ई. से लेकर १८३७ ई. तक हरिसिंह नलवा लगातार अफगानों से लोहा लेते रहे। अफगानों के विरुद्ध लड़ाई जीतकर उन्होंने कसूर, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर में सिख शासन की स्थापना की। काबुल बादशाहत के तीन पश्तून उत्तराधिकारी सरदार हरिसिंह नलवा के प्रतिद्वंद्वी थे।

पहला था अहमदशाह अब्दाली का पोता, शाह सूजा, दूसरा फतहखान और तीसरा सुल्तान मोहम्मद खान। सरदार हरिसिंह नलवा ने अपने अभियानों द्वारा सिन्धु नदी के पार अफगान साम्राज्य के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार करके सिख साम्राज्य की उत्तर पश्चिम सीमाओं का विस्तार किया था।

हरिसिंह नलवा की सेनाओं ने अफगानों को खैबर दर्रे के उस ओर खदेड़ कर इतिहास की धारा ही बदल दी थी। खैबर दर्रे से होकर ही ५०० ईसा पूर्व में यूनानियों के भारत पर आक्रमण करने और लूटपाट करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी दर्रे से होकर यूनानी, हूण, शक, अरब, तुर्क, पठान और मुगल लगभग एक हजार वर्ष तक भारत पर आक्रमण करते रहे। तैमूर लंग, बाबर और नादिरशाह की सेनाओं ने भारत पर आक्रमण कर बहुत अत्याचार किये।

हरिसिंह नलवा ने खैबर दर्रे का मार्ग बंद करके इस ऐतिहासिक अपमानजनक प्रक्रिया का पूर्ण रूप से अन्त कर दिया था। १८३७ ई. में जब महाराजा रणजीत सिंह अपने बेटे के विवाह में व्यस्त थे तब सरदार हरिसिंह नलवा उत्तर पश्चिम सीमा की रक्षा कर रहे थे।

महाराजा रणजीत सिंह की व्यस्तता के कारण एक महीने तक सैनिक न पहुँचने पर हरिसिंह नलवा अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए ३० अप्रैल १८३७ को वीरगति को प्राप्त हुए।

कहते हैं कि आज भी अफगानिस्तान की महिलाएँ नलवा के नाम से अपने बच्चों को डराती हैं। (सो जा बेटे नहीं तो नलवा आ जायेगा।) नलवा एक महान योद्धा, भारतीय सीमा का विस्तार करने वाले गुरु गोविन्द सिंह के असली उत्तराधिकारी थे।

वे १२ बजे रात अथवा दिन को हमला करते थे लगता था कि जैसे कोई देवदूत हमला कर रहा हो। वह महान देशभक्त, सीमा रक्षक और धर्मरक्षक थे। वे किसी के विरोधी नहीं थे बल्कि उनके अन्दर हिन्दू स्वाभिमान था, ऐसे हिन्दू हृदय सम्राट वीर सेनापति नलवा को उनके बलिदान दिवस पर स्मरण करना हम सब भारतीयों का कर्त्तव्य है।

- यमुनानगर
(हरियाणा)

डॉ. अम्बेडकर जी का पुस्तक प्रेम

विश्व के इतिहास में डॉ. भीमराव जैसा पुस्तक प्रेमी, अध्ययनशील, ज्ञान पिपासु व्यक्ति खोजने पर भी नहीं दिखाई देता। उन्हें पुस्तकों से इतना अधिक लगाव था कि जो भी उच्चकोटि की पुस्तक उन्हें दिखाई देती वे उसे खरीदकर ही रहते। उन्होंने अपने छात्र जीवन में ही अपने दैनिक खर्चों में कटौती करके लगभग दो हजार पुस्तकें खरीद ली थीं।

ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ पुस्तकें उनके लिए मनोरंजन का सर्वोत्तम साधन थीं। वे अध्ययन में इतने तल्लीन हो जाते थे कि उन्हें खाने-पीने आदि की भी सुध भूल जाती थी, वे समाधिस्थ हो जाते थे। वे अपने इसी अध्ययन के फलस्वरूप तत्कालीन भारत के सर्वश्रेष्ठ विद्वान बने और भारतीय संविधान-निर्माण जैसा महान् कार्य संपन्न कर सके। -

संस्कारों की पाठशाला

– डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा

सुबह के सात बजने वाले थे। अभी-अभी उसकी आँख खुली थी। किसी ने दरवाजा खटखटाया। उनींदी आँखों से उसने कहा- ''आ जाओ, दरवाजा खुला है।''

''जय श्रीकृष्ण माँ! ये लीजिए आपकी गरमागरम चाय। पिताजी कहाँ हैं?'' चाय की ट्रे लिए मुस्कुराते हुए सामने उनकी पंद्रह वर्षीया बेटी परिधि खड़ी थी।

''जय श्रीकृष्ण बेटी! तुम्हारे पिताजी बाथरूम में होंगे परी बेटा। तुम सुबह-सुबह ये.... शायद नहा भी चुकी हो।''

मालती को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। आठ बजे से पहले बिस्तर नहीं छोड़ने वाली नकचढ़ी परिधि, जो अपने हाथ से एक गिलास पानी भी निकाल कर नहीं पीती थी, आज उसका ये रूप वाकई चौंकाने वाला ही था।

''लीजिए माँ अपनी चाय। पिताजी की चाय मैं यहाँ रख देती हूँ। मैं नहा चुकी हूँ माँ! आपको मैंने कल ही बताया था न कि आठ बजे से मेरी गणित की विशेष कक्षा है। क्या बात है माँ! आप मुझे ऐसा क्यूँ देख रही हैं? मैंने दादी माँ से चाय बनाना सीख लिया है। पीकर देखिए।'' वह आग्रह कर रही थी।

''हूँ.... चाय तो बहुत अच्छी बनी है बेटी! पर तुम इतनी सुबह-सुबह...।'' उसे अब भी अपनी आँखों देखी और कानों सुनी पर विश्वास करना कठिन हो रहा था।

''सुबह-सुबह? माँ घड़ी देखिए। सवा सात बजने वाले हैं। इतनी देर में तो दादाजी नाश्ता-पानी करके बच्चों को पढ़ाने भी निकल जाया करते हैं।'' वह बताने लगी।

''हूँ.... सो तो है गाँव वाले सुबह बहुत जल्दी उठ जाते हैं।'' मालती ने कहा।

''जय श्रीकृष्ण परी बेटा! आज इतनी सुबह-सुबह कैसे उठ गई मेरी परी बिटिया?'' बाथरूम से निकलते हुए उसके पिताजी रमेश जी बोले।

''जय श्रीकृष्ण पिताजी! ये लीजिए आपकी चाय।'' परिधि उनकी ओर चाय की ट्रे बढ़ाती हुई बोली।

''धन्यवाद बेटी! तुम्हें क्या आवश्यकता थी सुबह-सुबह उठकर चाय बनाने की? तुम्हारी माँ बना देती न?'' रमेश जी बोले।

''पिताजी! आज से सुबह की चाय तो मैं ही बनाऊँगी। अब मैं बड़ी हो गई हूँ। और दादी माँ से चाय बनाना भी सीख गई हूँ।'' परिधि अपने चिर-परिचित अंदाज में बोली।

''बहुत अच्छा! और क्या-क्या सिखाया हैं दादी माँ ने हमारी परी बिटिया को?'' रमेश जी ने

उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा।

''चाय बनाना, नींबू का शरबत बनाना, सब्जी काटना, आटा गूँथना, रोटी और बेसन के पकोड़े बनाना सब। और दादाजी ने सुबह जल्दी सोकर उठना, रात को जल्दी सोना और हाँ, और बहुत ही अच्छे फटाफट पोहे बनाना भी सिखाया है।'' परी बोली।

''वाह.... बहुत बढ़िया! आखिर माँ-पिताजी किसके हैं।'' रमेश जी बोले।

''हूँ.... पर दादा-दादी तो मेरे ही हैं। अच्छा माँ-पिताजी, मैं कक्षा के लिए जा रही हूँ। सवा नौ बजे फिर मिलते हैं। जय श्रीकृष्ण।''

''जय श्रीकृष्ण बेटी... संभल कर जाना।'' मालती ने कहा। परिधि गणित की विशेष कथा के लिए निकल गई।

''एक ही महिने में कितना बदल गई है हमारी परिधि। इतनी सुबह स्वयं से उठकर, नहा-धोकर

हम सबके लिए चाय बनाना.... कितना आनंद दे रहा है। बता नहीं सकती मैं? मैंने कभी सोचा नहीं था कि इतनी जल्दी हमारी बेटी इतनी समझदार हो जाएगी।'' मालती को सब कुछ एक सुनहरे सपने जैसा ही लग रहा था।

''अच्छा है मालती। बेटा हो या बेटी घर का कुछ कामकाज सीख लें, तो आगे चलकर बहुत काम आता है।'' रमेश जी बोले।

''सही कह रहे हैं जी आप! भला हो आपके कंपनी वालों का जिन्होंने हम पति-पत्नी को एक महिने के लिए सिंगापुर जाने का अवसर दिया और मजबूरी में ही सही, मुझे परिधि को उसके दादा-दादी के पास छोड़ना पड़ा। कितनी गलत थी मेरी सोच, जो मैं हमेशा उसे उसके दादा-दादी से दूर रखने की कोशिश करती, ताकि वह उनके लाड़-प्यार में बिगड़ न जाए।'' मालती को अपने पूर्व के व्यवहार पर ग्लानि हो रही थी।

''मालती, कोई भी दादा-दादी या नाना-नानी अपने पाती-पोतों को बिगाड़ना नहीं चाहते। उनके लिए तो ये 'मूलधन से अधिक ब्याज प्यारे' होते हैं। हम माता-पिता की यह महज निर्मूल आशंका होती है कि बच्चे दादा-दादी और नाना-नानी के लाड़-प्यार में बिगड़ जाते हैं।'' रमेश जी ने प्यार से समझाया।

''बिलकुल सही कह रहे हैं जी आप। मैंने निश्चय कर लिया है कि अब से हम छुट्टियों में घूमने पहाड़ों पर नहीं, अच्छे संस्कार ग्रहण करने के लिए अपने गाँव, माँ-पिताजी के पास जाया करेंगे। समय-समय पर उन्हें भी अपने घर बुलाया करेंगे। कितना प्रसन्न होते हैं परिधि के साथ आपके और मेरे माँ-पिताजी।'' मालती ने कहा।

''यही उचित! अब हम ऐसा ही करेंगे।'' रमेश जी ने कहा।

- रायपुर (छ. ग.)

गोपाल और गोसाईं

– तपेश भौमिक

जब गोपाल बालक ही था, तब उसके पिता का देहांत हो गया था। उसके परिवार में भुखमरी की नौबत आ गई। तब उसकी माँ दूसरों के यहाँ कुटाई–पिसाई करके किसी तरह गुजारा करने लगी। गोपाल के पड़ोस में आजू गोसाई नामक एक व्यक्ति रहता था। वह अपने यजमानों के यहाँ पूजा–पाठ करवा कर कुछ अच्छा ही कमा लेता था। वह यजमानों के यहाँ स्वयं अपने हाथों से पकाकर भोजन करता था।

अत: उसे पूजा–पाठ और भोजन पकाने के लिए एक सहायक की आवश्यकता थी। उसने गोपाल को देखकर सोचा कि यह मेरे लिए अच्छा सहायक बन सकता है क्योंकि इसमें वे सारे गुण हैं जिससे लोग आकर्षित होते हैं। बचपन से ही उसकी हाजिर–जवाबी की बातें फैल चुकी थी। जहाँ कहीं भी वह मिल जाता लोग उसे घेर लेते और तरह–तरह के प्रश्न करते। गोपाल भी गोल–मोल बातें करके सबका खूब मन बहलाता। लोग खूब हँसते।

अत: एक दिन गोसाईं ने गोपाल की माँ से कहा कि वह गोपाल को अपने साथ अपने यजमानों के यहाँ ले जाना चाहता है। इससे उसके भोजन की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। उसे भी साथ–साथ पकवान और मिष्ठान्न का भोजन मिल जाया करेगी। गोपाल की माँ को बात जंच गई।

गोपाल अब आजू गोसाई के साथ यजमानों के यहाँ डोलने लगा। वह अपना काम मन लगाकर करता था और साथ ही यजमानों का खूब मनोरंजन भी करता, जिस कारण गोसाईं को कभी गोपाल को डाँटने की नौबत नहीं आई। लेकिन दूसरी ओर आजू गोसाईं उदार व्यक्ति नहीं था। गोपाल कुछ पेटु किस्म का बचपन से ही था। अत: वह अधिक खाता था। गोसाईं इस कारण उससे नाखुश रहने लगा। वह अपने यजमानों के यहाँ भोजन पका कर दो पत्तलों पर परोसता था। एक अपने लिए और दूसरा गोपाल के लिए। वह गोपाल के पत्तल पर स्वादिष्ट व्यंजन और मिष्ठान्न वगैरह न के बराबर देता एवं लगभग सारा कुछ स्वयं ही चट कर जाता। इससे गोपाल दुखी रहने के बजाय गोसाईं को सबक सिखाने की बात सोचने लगा।

अगले दिन एक यजमान के यहाँ गोसाईं दो पत्तलों पर भोजन परोसने लगा। जैसे ही भोजन परोसने का काम पूरा हो गया, वैसे ही गोपाल ने झट गोसाईं के पत्तल से एक मिठाई उठा कर अपने मुँह के हवाले कर दिया।

इस पर गोसाईं आग बबूला हो गया। उसने गोपाल को खूब डाँट लगाई तो उसने भोलेपन से कहा कि मैंने सोचा कि वह पत्तल मेरे लिए है। इसलिए मैंने मिठाई उठाकर खा ली। डाँटने की आवाज सुनकर तब तक यजमान के घर के लोग वहाँ आ चुके थे। इस

स्थिति में गोसाईं को काफी शर्मिंदा होना पड़ा। गोसाईं ने लज्जित होकर गोपाल को वह पत्तल दे दी।

अगली बार गोपाल कम भोजन वाले पत्तल से ही भोजन करने लगा था लेकिन अपने पत्तल को गोसाईं के पत्तल से सटा दिया। गोपाल ने उसके भोजन को जूठा कर दिया था। गोसाईं को इस दिन भूखा ही रहना पड़ा। वह अपना गुस्सा पीकर रह गया। उसे यजमानों के समक्ष अपनी हेठी होने का डर था। इसलिए उसने इस अवसर पर चुप रहना ही ठीक समझा। गोपाल ने दोनों पत्तलों के भोजन को अपने पेट के हवाले कर दिया। इस दिन गोसाईं गोपाल की चालाकी के आगे अपने को बौना समझ कर उसे काम से निकाल दिया।

लेकिन इससे पहले ही गोपाल अपनी गोल-मोल बातों के कारण यजमानों का चहेता बन चुका था। अब गोसाईं जहाँ भी अपने यजमान के घर जाता वहीं वे गोपाल के बारे में पूछते। गोसाईं को बरबस फिर से अपना सहायक बनाना पड़ा। अब वह समझ चुका था कि भले ही वह पूजा-पाठ करवाता है पर गोपाल की लोकप्रियता उससे कहीं अधिक है। अब वह गोपाल के पत्तल पर अपने बराबर ही मिष्ठान्न और स्वादिष्ट व्यंजन परोसने लगा।

– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार
(पश्चिम बंगाल)

राजकीय मछलियाँ | त्रिपुरा की राजकीय मछली

पाबदा

– डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत, बर्मा, चीन आदि में,
यह मछली मिल जाती।
नदियों, कुण्डों से कीचड़ तक,
की यह शान बढ़ाती।।

आँखें बड़ी और सर छोटा,
मुँह पर बालों वाली।
फुट भर लम्बी, चिकनी काया,
मछली बड़ी निराली।।

दिन में सोती और रात में,
ऐसी घात लगाती।
मछली, मेंढक और केकड़े,
सारे चट कर जाती।।

अण्डे देने के पहले यह,
रंग चटक कर लेती।
कंकड़-पत्थर वाले तल में,
फिर यह अण्डे देती।।

मक्खन जैसी इसकी काया,
फिसल हाथ से जाती।
इसीलिये तो 'बटर कैट फिश'
यह जग में कहलाती।।

– भोपाल (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

–संकेत गोस्वामी

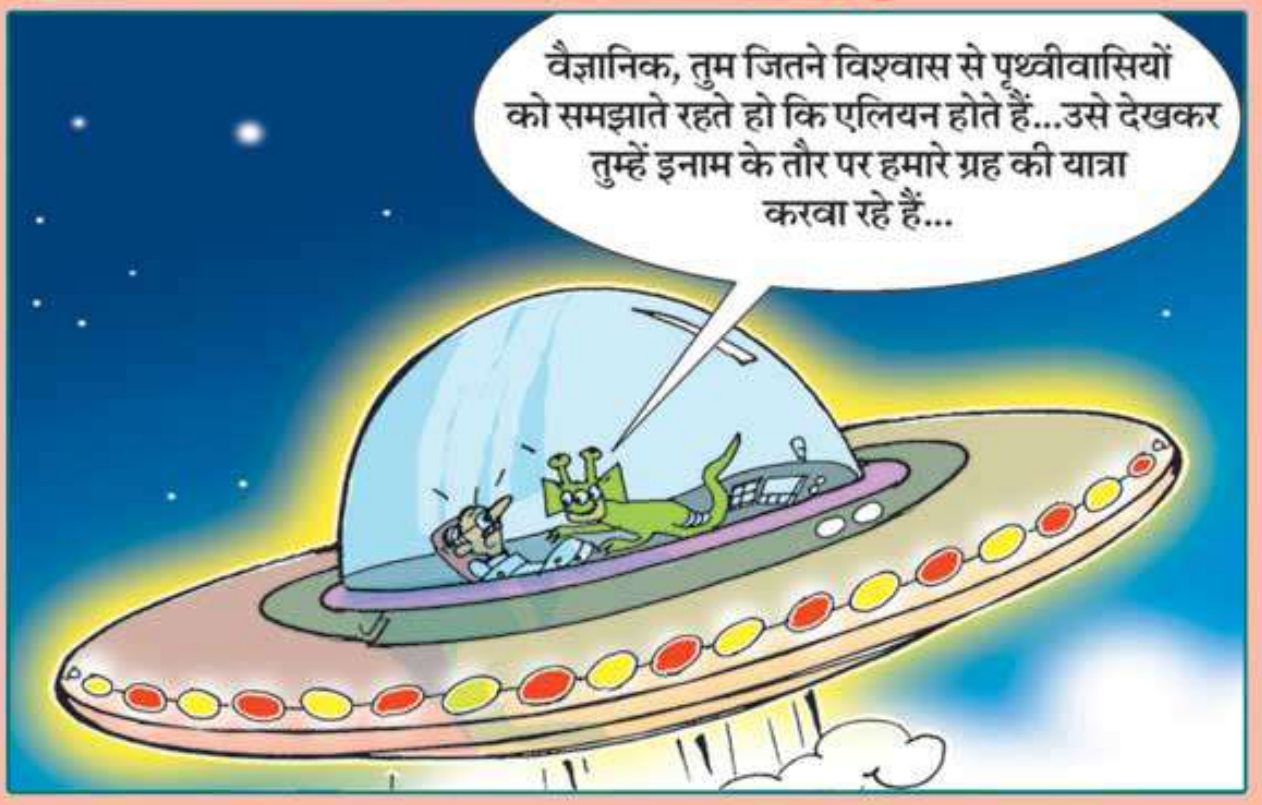

नन्हा-सा बागबान

– मुग्धा पाण्डे

मोनू एक बहुत ही प्यारा लड़का था। वह अपने माता-पिता को कभी भी परेशान नहीं करता था। उसके माता-पिता अगरबत्ती बनाने के कारखाने में काम करते थे। मोनू पाँचवी कक्षा में पढ़ता था और अपने से छोटे बच्चों की खूब सहायता किया करता था। मोनू का घर बहुत छोटा था इसलिए वह कॉलोनी के उद्यान में चला जाता और वहीं पर अपनी पढ़ाई करता अपना क्राफ्ट का काम किया करता था। मोनू के मन में झूठ, छल, कपट और लालच बिलकुल भी नहीं था। एक दिन मोनू उद्यान में बैठकर पढ़ाई कर रहा था तो उसने देखा कि उद्यान में माली काका पौधों की छटाई आदि का काम कर रहे हैं। छंटाई करके वह कटी हुई शाखा या तो गौ के चारे में डालते या कचरा पात्र में। पढ़ाई करते समय, वह गौर से देखता रहा। अचानक उसने माली काका से अनुमति लेकर एक बेकार हो रही गुलाब की डंडी जिसे माली काका कचरा पात्र में फेंक रहे थे उसे माँग लिया। घर आकर उसने माँ से पूछकर एक डब्बा लिया और उसमें मिट्टी भरकर वह डंडी रोप दी।

माँ उसमें बची हुई चाय की पत्ती तथा आलू के छिलके बारीक करके डाल देती। इस कारण वह मिट्टी बहुत उपजाऊ होती गई। अब वह डंडी एक पौधे का रूप ले चुकी थी। समय आने पर उसमें फूल खिल उठे। होली के अवसर पर मोनू ने वह फूल एकत्र किये और एक गुलदस्ता बना लिया और माता-पिता को दिखाया। मोनू ने वह माता-पिता की उपहार में दिया पर वह दोनों कहने लगे कि मोनू हमें तो एक सुन्दर फूल तुम्हारे रूप में मिला है। तो इसे होली उत्सव में ले जाओ। मोनू ने उनकी बात मान ली।

उनकी कॉलोनी में होली उत्सव मनाया जा रहा था। उनके शहर के महापौर भी उस उत्सव में आमंत्रित थे। मोनू ने खुशी-खुशी उनको वह गुलाब के फूलों का गुलदस्ता भेंट किया तो पीछे से शरारती बच्चे चीखने लगे। चोर मोनू, उद्यान से फूल चुराता है। किन्तु यह सुनते ही माली काका ने जोर से कहा कि वह चोर नहीं है। एक महीने पहले मोनू एक कटी हुई डंडी मुझसे माँग कर ले गया और अपने घर पर उसे पौधा बनाया है। यह सच सुनकर वह शरारती बच्चे शर्म से पानी-पानी हो गये। कुछ पल के लिए उस जगह पर एक सन्नाटा, एक मौन-सा भर गया।

''आह! आप तो वैज्ञानिक हो मोनू।'' जब महापौर ने ऐसा कहकर उसका नाम लेकर फिर मोनू को एक मोती की माला भी पहना दी तो मोनू की आँखें भर आई। मोनू ने संकल्प लिया कि वह भी पढ़-लिखकर एक सम्मानित व्यक्ति बनेगा। एक गुलाब की डंडी ने उसे पौधे के रूप में ऐसा गौरवपूर्ण दिन दिखाया था।

– नई दिल्ली

घर का वैद्य

उलटियाँ हो रही हो तो?

– उषा भंडारी

सुनीता दादाजी से घरेलू उपचारों पर चर्चा कर रही थी उसने पूछा– दादाजी! उलटियाँ हो रही हो तो क्या करना चाहिए?

दादाजी ने कहा– एक नींबू के दो टुकड़े कर दें। उन पर पीसा हुआ सेंधा नमक और काली मिर्च डालकर धीरे–धीरे चूस लें। ऐसा करने से जी मचलना, उलटी होना तथा चक्कर आना बंद हो जाते हैं। सुनीता ने जानना चाहा– यदि घर में नींबू न हो तब क्या करें?

दादाजी ने बताया– छः चम्मच पीसा हुआ धनिया लें। उसको आधा लीटर पानी में एक घंटे तक भिगोकर रखें। उसमें दो चम्मच पीसी हुई मिसरी डाल दें। एक घंटे बाद छान लें। यह छना हुआ पानी छोटे बच्चे को एक छोटा चम्मच, बड़ों को दो बड़े चम्मच एक–एक घंटे से दे। इससे हर तरह की उलटियाँ बंद हो जाती है। दादाजी ने कहा– यह दवा उसी दिन तैयार करना जरूरी है। दादाजी ने आगे बताया– तुलसी का रस और शहद मिलाकर चाटने से भी उलटियाँ और जी मचलाना बंद हो जाता है।

राजू ने पूछा– दादाजी! जब बार–बार दस्त लगे, तो कैसे उपचार करना चाहिए?

दादाजी ने कहा– रोगी को आराम कराना चाहिए। दही, चावल खिलावें। सूखा आंवला दस ग्राम और छोटी हरड पाँच ग्राम लें। दोनों को पीसकर एक–एक ग्राम सुबह और शाम पानी के साथ रोगी को देवें। ऐसा करने से चार–पाँच दिन में रोगी को पूरा आराम हो जाता है। एक और उपाय बताते हुए दादाजी बोले– आधे गिलास पानी में नींबू का रस मिलाकर रोगी को पिलाएँ। ऐसा दिन में पाँच बार करें। इससे दस्त बंद हो जाते हैं।

राजू ने कहा– दादाजी! यदि यह बीमारी पुरानी हो तो क्या करें?

दादाजी ने कहा– सौंफ और मिसरी बराबर की मात्रा में लेकर मिला लें और बारीक पीस लें। यह चूरन एक–एक चम्मच दिन में चार बार पानी से लें। ऐसा बीस दिन करने से पेट दर्द और पुराने से पुराने दस्त तथा पेचिश की बीमारी ठीक होती है।

मीरा ने पूछा– दादाजी! कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे दस्त सहित पेट के सभी रोग दूर हो जाते हों?

दादाजी ने कहा– सौंफ, सफेद जीरा और मिसरी बराबर मात्रा में लें। तीनों को मिलाकर बारीक पीस कर शीशी में रख लें। सुबह और शाम एक–एक ग्राम चूरन पानी से बीस दिन तक खिलावें। इससे पेट के सभी रोग ठीक हो जाते हैं। और भूख भी लगने लगती है।

दादाजी ने फिर कहा– तुम लोग सो जाओ बाकी बातें फिर करेंगे।

– इन्दौर (म. प्र.)

बड़ी होकर ममता क्या बनेगी?

– वीरेंद्र बहादुर सिंह

गर्मी की एक दोपहर ममता और वीरेन्द्र अपने वाचनालय में बैठे कहानी पढ़ रहे थे। गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। ऐसे समय में दोपहर को निकलना लगभग असंभव था। क्योंकि गर्मी बहुत पड़ रही थी। गर्मी इतनी थी कि ममता तो बगीचे में भी जाने से डरती थी। इसी डर की वजह से ममता और वीरेन्द्र ने तय किया था कि रोज दोपहर को कहानी पढ़ेंगे। जिससे समय आसानी से कट जाए। खैर, कहानी पढ़ कर ऊब चुकी ममता ने सचिन तेंदुलकर की एक किताब हाथ में ले ली, जिसमें लिखा था कि सचिन ने बचपन से ही तय कर लिया था कि वह क्रिकेटर बनेगा। क्योंकि उसे क्रिकेट खेलने का बहुत शौक था।

यह पढ़ते हुए ममता के मन में एक सवाल उठा। उसने वीरेन्द्र से कहा– ''देख तो वीरेन्द्र सचिन ने बचपन में ही सोच लिया था कि वह क्रिकेटर बनेगा। जबकि मैंने तो सोचा ही नहीं कि बड़ी होकर क्या बनूँगी? चल, आज ही तय करते हैं कि हमें बड़े होकर क्या बनना है।''

वीरेन्द्र ने हाँ सिर हिलाया और खड़े होकर कुछ खोजने लगा। यह देखकर ममता खीझ कर बोली, ''मैं तुमसे कुछ कह रही हूँ और तुम कुछ दूसरा ही काम कर रहे हो। मेरी बात सुनो, मुझे आज ही तय करना है कि बड़ी होकर मुझे क्या बनना है?''

वीरेन्द्र ने कहा– ''अरे, तुम एक मिनिट शांति रखो, मैं ऐसा ही कुछ खोज रहा हूँ।''

थोड़ी देर खोजने के बाद वीरेन्द्र ने एक बड़ा–सा चार्ट निकाला। उस चार्ट में अलग–अलग चित्र बने थे। वीरेन्द्र ने ममता से कहा, ''देखो! इसमें अलग–अलग प्रोफेशन के चित्र हैं। इसमें देख कर तय करो कि तुम्हें क्या बनना है।''

ममता वह चार्ट देखने लगी। उसने सबसे पहले शिक्षक का चित्र देखा। उसे देखकर ममता ने कहा– ''मुझे पढ़ाना तो अच्छा लगता है, पर ज्यादा बच्चों को मैं संभाल नहीं सकती, इसलिए शिक्षक नहीं बनूँगी।''

इसके बाद ममता ने डॉक्टर का चित्र देखा। डॉक्टर का चित्र देखकर वह बोली– ''न बाना न, मुझे बहुत डर लगता है। किसी का खून देखकर मैं डर जाती हूँ।''

इसके बाद उसने पुलिस का फोटो देखा। वह पुलिस भी नहीं बनना चाहती थी। क्योंकि वह रात दिन ड्यूटी नहीं कर सकती थी। इसके बाद उसने क्रिकेटर का चित्र देखा। इसमें उसे फील्डिंग भरने में प्राब्लम थी। फुटबालर बनने में उसे पैरों में दर्द की चिंता थी। चित्र बनाना उसे खास आता नहीं था, इसलिए पेंटर बनने का सवाल ही नहीं था।

एक–एक करके उसने सभी चित्र देख डाले, उसे क्या बनना है, यह वह तय नहीं कर पाई। अब क्या करें? वह हताश होकर बैठ गई। उसे खुश करने के लिए बेर ने टीवी पर चार्ली चेपलिन का शो चला दिया। बेर को लगा, चार्ली चेपलिन का शो देख कर ममता का मूड ठीक हो जाएगा।

चार्ली चेपलिन का शो देखकर ममता बोली, ''वीरेन्द्र मेरी समझ में आ गया कि मुझे क्या बनना है।

मैंने तय कर लिया है कि मैं कामेडियन बनूँगी। मैं चार्ली चेपलिन बनूँगी। देखो न, वह सभी को कितनी अच्छी तरह हँसाता है। मैं भी सभी को हँसाऊँगीं।''

यह कहकर ममता ऊपर गई और चार्ली चेपलिन की तरह ब्लैक शूट पहन कर छड़ी लेकर नीचे आ गई। उसने छोटी–छोटी मूँछें भी लगा लिया था।

उसे देखकर वीरेन्द्र को हँसी आ गई। इसके बाद उसने उसे समझाया, ''ममता तू है ही चाली चार्ली। कामेडियन बनना है तो यह दिखावा करने की आवश्यकता नहीं है। चार्ली बहुत अच्छा कलाकार था। उसके जैसा दूसरा कोई नहीं हो सकता। खासकर जो किसी की नकल करता है तो उस जैसा नहीं बन सकता। तुम अपनी अलग पहचान बनाओ। तुम कामेडियन ही बनो, पर अपनी अलग छाप छोड़ो। तुम ममता बन कर लोगों को हँसाओगी तो लोगों को अधिक अच्छा लगेगा।''

ममता ने कहा– ''तुम्हारी बात सच है वीरेन्द्र, मैं वैसा ही करूँगी, जैसा तुम कह रहे हो। मैं किसी की नकल नहीं करूँगी। खुद अपनी पहचान बनाऊँगी।''

– नोएडा (उ. प्र.)

– राजा चौरसिया, कटनी (म. प्र.)

'देवपुत्र' का अनुपम 'अवधेश विशेषांक' प्राप्त करते ही मुझे धन्यता का बोध हो गया। आवरण पर भए प्रकट कृपाला दीनदयाला प्रभु श्रीराम का अति मनोमुग्धकारी उत्कृष्ट चित्र पौराणिक कथाओं के प्रति आकृष्ट करता है। श्री माहेश्वरी जी! आपने स्वयं की संकल्पनाओं को महा संकल्पों के साँचे में ढालकर सभी कथाओं को तोरणद्वार, धर्मध्वजा और सूर्यवंशी कुल के चिर प्रतीक सूरज देव को अंकित करने के साथ काव्यमय पंक्तियों से सनातन पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत करने का स्तुत्य कार्य किया है। बेहतरीन, सुसज्जित चित्रांकन, जैसी तस्वीर वैसा फ्रेम की जुगलबंदी का आईना है।'

इस विशेषांक के सभी आलेख आपके नैतिक अवदान के समान हैं। दिनांक २२ जनवरी को श्रीराम अपने अयोध्या के प्राचीन धाम में विराजमान हुए तो इधर 'देवपुत्र' के 'अवधेश विशेषांक' में श्री राम की वंशावली के संदर्भ में २२ कथाएँ हैं। नव्य, भव्य और दिव्य महोत्सव के त्रिवेणी संगम से जुड़ी जानकारियाँ परोसना एक बहुत बड़ी पुण्याई है। बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए दुर्लभ से दुर्लभ जानकारियाँ सर्वसुलभ कराना अत्यधिक चाहने व सराहने योग्य है। 'हरि अनंत हरिकथा अनंता' के बाद भी संपादक एवं क्रीम जैसी टीम ने इतिहास रच दिया है। सभी कथाओं के तथ्य में सत्य है। कथाओं के सभी शीर्षक सारगर्भित हैं। कथाएँ, व्यास शैली के स्थान पर समास शैली में होने के कारण पठनीयता की दृष्टि से जितनी रोचक हैं, उससे ज्यादा प्रेरक हैं। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि ये शोधात्मक एवं बोधात्मक सारस्वत पौराणिक कथाएँ, संस्कार की दिशाएँ हैं। 'अपनी बात' के अंतर्गत ये पंक्तियाँ सभी कथाओं की भूमि जैसी भूमिका के समान हैं। यथा– ये कथाएँ केवल रहस्य, रोमांच ही नहीं बल्कि हमारे मन में जीवनमूल्यों की स्थापना करती हैं।

यह भी घ्यातव्य है कि कई पाठकों ने इसे ऐसे सँजोकर रखा है जैसे पुराने जमाने में विद्यालयीन बच्चे अपनी किताबों में मोरपंख सँजोकर रखते थे। हमारे यहाँ के पल्लवित से पुष्पित हो रहे कुछ बच्चों ने गुल्लक फोड़कर उन पैसों से ही इस विशेषांक की प्रतियाँ प्राप्त की हैं। फूल की गंध तो हवा की दिशा में जाती है, लेकिन इस चिरंजीव विशेषांक के यश की गंध सभी ओर गई है। आपके समस्त संपादकीय परिवार के भरपूर प्रयास के परिणाम को प्रणाम है।

पैनी नजर

एक जैसे धब्बों वाले दो जिराफ ढूँढ़ों कौन से हैं?

– राजेश गुजर

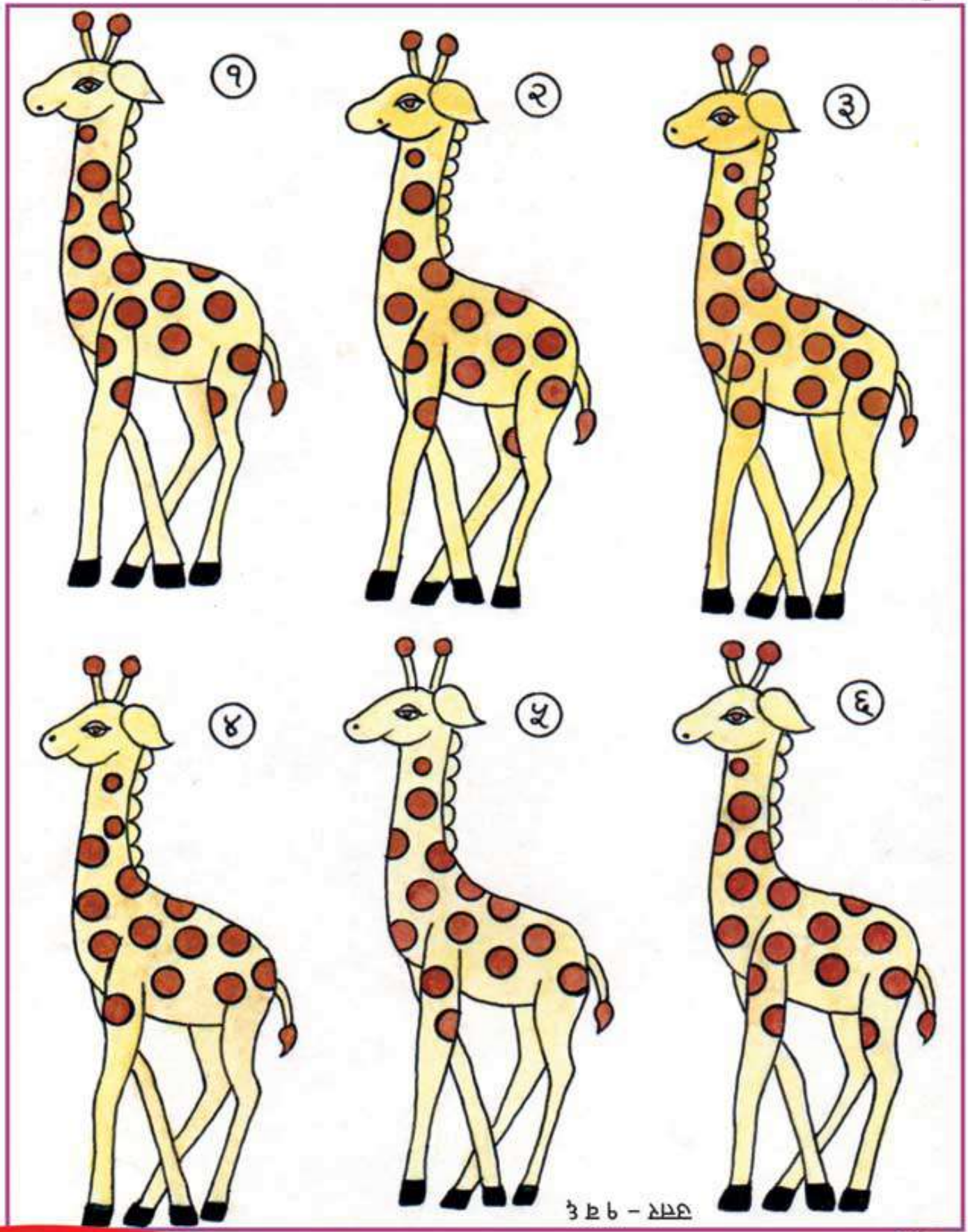

उत्तर – १ व ६

नीलू मास्टर

– हरदेव चौहान

पाँचवीं में पढ़ने वाला नीलू शाला से घर आ गया था। पीछे–पीछे सातवीं में पढ़ती उसकी बहन रानी भी अपनी शाला बस से घर पहुँच गई। जब वे घर आए तो दोनों ने अपने शाला बैग निश्चित स्थान पर टिका दिए। गणवेश बदल ली। मुँह, हाथ धोए और खाने की मेज पर बैठ गए। माँ वहाँ पहले से खाना परोसने के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

माँ ने दोनों बच्चों की प्लेटों में चावल, दाल, सलाद और रोटी परोस दी। जैसे ही उनकी माँ अपनी प्लेट से खीरे का एक टुकड़ा उठा कर मुँह में डालने लगी तभी अचानक नीलू उन्हें रोकता हुआ बोला, ''सभी को खाना खाने से पहले एक टेस्ट पास करना होगा।''

''यह कौनसी कठिन परीक्षा होगी.... आप चाहे तो पंद्रह शब्द कहें.... मैं सब बता दूँगी।'' नीलू की बात काटती रानी बोली।

''नीलू! पिक्कू! हमें कौनसी परीक्षा में डालने जा रहा है?'' हँसते हुए माँ ने पूछा।

''सुनो! मैं दस शब्द कहूँगा... कौआ, बरगद, हलवाई, दुकान, टेबल, बोतल, चोंच, ट्यूब, सोड़ा और आखिरी शब्द है घोसला... अब कि जो भी सभी शब्द सही ढंग से दो दुहराएगा वही परीक्षा में से सफल माना जाएगा...।'' कुर्सी पर बैठे किसी मास्टर जी की तरह नीलू ने अपनी बात समाप्त की।

''पहला कौआ, दूसरा झोंपड़ा, तीसरा पीपल, नहीं सच! बरगद, चौथा हलवाई, स्टोर और... और.... सच्ची! आगे कुछ भी याद नहीं आ रहा।'' चेहरे को अपने हाथों में छिपाते हुए रानी बोली।

''मुझसे सुनो... पहला कौआ, दूसरा झोंपड़ा, तीसरा बरगद, चौथा हलवाई, आगे दुकान, ट्यूब और सातवाँ... उफ! बड़ा मुश्किल है यह प्रश्न.... बाकी। हमें ज्यादा याद भी नहीं रहता अब।''

चलिए छोड़ो गिनती–मिनती... हमें पता चल गया है कि हमारी माँ और बहन रानी की स्मरण शक्ति बहुत तेज हो गई है। आप कभी प्रथम श्रेणी में पास नहीं हो सकते... अब आप खाना भी खाएँ और हमारी कहानी भी ध्यान से सुने।'' माँ की बात पूरी होने से पहिले नीलू बोला।

''भाई जी! कहानी सुनाओ... देखना, मैं सारी की सारी कहानी दुहरा दूँगी।'' रोटी का टुकड़ा मुँह में डालती रानी बोली।

''सुनो! एक कौआ था। वह बहुत प्यासा था।'' ''हमारी किताब में से एक प्यासे कौवे की कहानी है। कौवे को एक घड़ा मिलता है। उसमें पानी बड़ा कम होता है। पहिले वह उसमें पथर–गिट्टे डाल

कर पानी को ऊपर लता है और फिर वह पानी पीकर फुर्र.. उड़ जाता है...और बताओ।'' नीलू की पूरी कहानी सुनने से पहले ही मानी बोलती है।

''नहीं! जी नहीं! पिटर... पिटर करने से पहले, बुद्धिमान व्यक्ति को बहुत ध्यान से सुनना चाहिए... मानी को चुप कराते नीलू बोला।

''छोड़ो! अपनी कहानी सुनाओ।''

माँ ने लाड़ से नीलू का सिर पलोसते कहा।

''सुनो जी! एक कौआ था। वह बहुत प्यासा था। वह बरगद वाले अपने घोंसले से उड़ा और हलवाई की दुकान पर चला गया। वहाँ टेबल पर एक सोड़े की बोतल पड़ी थी।

सोड़ा देख उसके मुँह में पानी आ गया। फूटी किस्मत.. उसकी चोंच बोतल में पड़े सोड़े के पास न पहुँच सकी... उसने इधर, उधर नजर दौड़ाई... पास में ही उसे एक ट्यूब मिल गई... उसने क्या किया,

ट्यूब को बोतल में डाल दिया। मजे से सोड़ा पीकर अपनी प्यास बुझाई और अपने घोंसले में लौट आया।'' नीलू ने कहानी सुनाई।

''भैया! सुनाऊँ पूरी की पूरी कहानी? बताओ, बदले में क्या पुरस्कार दोगे?'' अपने हाथों को नैपकिन से साफ करती रानी बोली।

''मैं समझ गई! इस सयाने ने हमारी परीक्षा वाले दस शब्द भी इसी कहानी में से ही पूछे थे। सुनो... कौआ, बरगद, हलवाई, दुकान, टेबल, बोतल, चोंच, ट्यूब, सोडा और आखिरी शब्द बनता है घोसला।'' मुस्कराती हुई माँ बोली।

''वाह! अबकी हमारी माँ भी पास हो गई।''

खाने की मेज से उठकर ताली बजाते हुए नीलू ने कहा।

''माँ! माँ!! लेकिन आपको ये सारे सब शब्द कैसे याद हो गए?'' हैरानी से अपने सिर को खरोंचते हुए रानी ने पूछा।

''लल्ली जी! हर बात को पहले बड़े ध्यान से सुनना चाहिए और साथ-साथ उसे एक चित्र की तरह आपके मस्तिष्क में बैठा लेना चाहिए..... ऐसा करने से हमें सभी, कुछ अच्छे से याद हो जाता है... यह हमारे मास्टर जी का स्मृति बढ़ाने वाला सूत्र है।''

हँसते हुए नीलू बोला और दोपहर का आराम करने अपने कमरे में चले गया।

– चंडीगढ़

गमला मेरा

– अनीता गंगाधर शर्मा,
अजमेर (राजस्थान)

माटी का प्यारा सा गमला,
देख मुझे मुस्काया।
हिलता-डुलता होकर टेढ़ा,
झट करीब वह आया।।

बोला बिन पौधे के दीदी,
मैं तो रहूँ अकेला।
मिलता साथ मुझे जब इनका,
तब लगता है मेला।।

गर्मी में मिलते ही पानी,
मजा मुझे है आता।
संग पौधे के पाकर ठंडक,
मैं भी खुश हो जाता।।

पर सर्दी में जब भी दीदी,
देती हो तुम पानी।
थर-थर थर-थर काँपू मैं तो,
निकले मुँह से नानी।।

साथ जरूरी है जीवन में,
खिलती मन की क्यारी।
गुडहल गुलाब गेंदा तुलसी,
से है अपनी यारी।।

फूल सभी जब खिलते मुझमें,
मन मेरा इठलाता।
झूम हवा में जोर-जोर से,
मैं भी गीत सुनाता।।

शिशु गीत माला

– सुरेश सौरभ ,
खीरी (उ. प्र.)

पापड़ वाला

पापड़ ले लो पापड़ ले लो!
कुर्रम–कुर्रम पापड़ है,
नरम–नरम पापड़ है
मुँह में रखी झटपट गायब,
ऐसा बढ़िया पापड़ है।

गौरेया

यह प्यारी गौरेया है,
दाना–चुग्गा खाती है
बच्चों को खिलाती है,
यह बड़ी चिलबिल्ली है
देखी इसने दिल्ली है,
जैसे घर की गैया है
वैसे प्यारी गौरेया है।

कौवे जी

कौवे जी ओ! कौवे जी,
काँव–काँव कनफोड़ू जी
तुम इतने क्यों काले हो,
क्रीम लगाओ, पाउडर लगाओ,
हो जाओ तुम गोरे जी।

टिंकू भाई

इधर दौड़ना उधर दौड़ना,
फिर सीढ़ी छू वापस आना
टॉफी खाकर मुँह चिढ़ाना,
सीटी वाला बाजा बजाना
काम न इनका कोई भाई,
नाम है इनका टिंकू भाई।

मोबाइल

यह शैतान का बच्चा है,
हरदम पापा के संग रहता है।
पापा इसको खूब झुलाते,
दूर–दूर की सैर कराते
मुझको तनिक न भाता है,
मोबाइल यह कहलाता है।

तोंद

बुलडोजर सी चलती है,
हरदम खाती रहती है।
काम न कोई करती है,
तोंद यह बड़ी निठल्ली है।

नानी अम्मा

नानी अम्मा आयेंगी,
चिज्जी–विज्जी लायेंगी।
गौरी को खिलायेंगी,
गौरी ऊधम मचायेगी।
नानी उसे दुलरायेंगी,
झूला खूब झूलायेंगी।

लेफ्टिनेंट रामप्रकाश रोपड़िया

वे हरियाणा के हिसार जिले के पात्री गाँव में १० जून १९५९ को जन्मे थे। गाँव से प्राथमिक शिक्षा पूरी कर हरियाणा के सैनिक स्कूल कुंजपुरा से उच्चत्तर माध्यमिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर खड़कवासला थी 'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी' में भरती हो गए। १९८१ में मद्रास रेजीमेंट में प्रवेश किया। उनकी २६ सी मद्रास की थी कंपनी को ५–६ जून की रात स्वर्ण मंदिर से उग्रवादियों को खदेड़ने का दायित्व मिला। यह १९८४ की बात है।

कंपनी के कमाण्डर ये थे लेफ्टिनेंट रामप्रकाश रोपड़िया। चारों ओर आधुनिक स्वचालित हथियारों से लैस उग्रवादी घात लगाए बैठे थे। जैसे ही योजनानुसार वे पहली मंजिल पर पहुँचने के लिए प्रयास किए चौथी बार में ही सफलता मिली। वे अपने साथियों के साथ बंकरों पर कब्जा करते शत्रुओं को खदेड़ कर पूरे मंदिर से निकाल रहे थे।

डी. कंपनी नीचे के तल पर तैनात थी। सीढ़ियों पर छुपे उग्रवादियों को समाप्त करने के लिए जैसे ही दरवाजा खोला। तड़ातड़ फायरिंग का सामना करना पड़ा। दो हथगोले फेंककर रास्ता बनाते वे सीढ़ियों पर पहुँचे। घायल हो चुके थे। कंधे व गले पर तीन गोलियाँ लगी थीं फिर भी एक आतंकी को ढेर कर वे डी. कंपनी से सम्पर्क साधने में सफल हो गए लेकिन अत्यधिक खून बह जाने के कारण वे नीचे आते ही अचेत हो गए।

तुरंत अस्पताल पहुँचाया गया। किन्तु प्राण मातृभूमि की सेवा में विसर्जित हो गए। अद्भुत साहस और कार्य के प्रति निष्ठा तथा घायल होकर भी अपने साथियों का उत्साह बढ़ाते रहने वाले लेफ्टिनेंट रामप्रकाश रोपड़िया मरणोपरांत अशोकचक्र से सम्मानित हुए।

बाल पहेलियाँ

मातृदेवता

– व्यग्र पाण्डे

१) माँ नहीं पर माँ के जैसी, नहीं कोई रिश्तों में वैसी
जब भी वो घर पर आए, जी भर के खाने को लाए
२) जिसने कंधों पर झुलाया
रोया तो कुछ उसने गाया
बचपन सबका उन संग बीता
हैं नहीं पर वो माता–पिता
३) सबके लिए जिसे जीना आता
सेवा का अमृत पीना आता
सारा जग जिसका यश गाता
जिसका दुलार स्वयं चाहे विधाता
४) सबसे ज्यादा बच्चों को चाहती
उनके खातिर माँ से भिड़ जाती
चलती जिसकी सारे घर में
बताओ तो कुछ आया सर में
५) खुद का हिस्सा स्वयं बचाती, खुद खाती ना मुझे खिलाती
छोटी बड़ी का फर्क उसे ना, माँ से बढ़कर प्यार जताती।
६) होती ना घर की, बगल की है
हर बात में जो दखल की है
काम आती है जो अच्छे बुरे में
बताओ बच्चों पहेली अकल की है

– गंगापुर सिटी (राजस्थान)

उत्तर– १) मौसी, २) बुआ, ३) माता, ४) दादी, ५) बहिन, ६) पड़ोसन।

नव वर्ष का वादा

चित्रकथाः देवांशु वत्स

बंकी की शरारत

– डॉ. के. रानी

चिंकू बकरी सालों से रामू किसान के साथ रह रही थी। वह उसकी उचित देखभाल करता। चिंकू को यहाँ पर कोई परेशानी नहीं थी। सुबह के समय वह और किसानों की बकरियों के साथ चरने के लिए चारागाह चली जाती और दोपहर में पेट भरकर सबके साथ वापस लौट आती। रामू का बेटा रोनी चिंकू को बहुत प्यार करता था। एक बार वह अपने मुकेश चाचा के घर गया। उन्होंने घर पर बहुत सुंदर सफेद खरगोश का जोड़ा पाल रखा था। इन दिनों उनके साथ दो छोटे बच्चे पंकी और बंकी थे। रोनी को वे बहुत सुंदर लगे।

रोनी चाचा से जिद कर बंकी को अपने साथ घर के आया। रोनी को जब भी मौका मिलता वह बंकी के साथ खेलता दोपहर में चिंकू चरकर घर लौट आती। रामू उसे और बंकी को घर के साथ बने बाड़े में छोड़ देता। बंकी बहुत शैतान था। वह हर समय चिंकू को तंग करता रहता। एक दिन दोपहर में चिंकू आराम कर रही थी। तभी बंकी उसकी पीठ पर चढ़ गया और उछलकूद करने लगा। ''यह क्या कर रहे हो बंकी ?''

''मैं खेल रहा हूँ। तुम भी मेरे साथ खेलो।''

''यह खेल का मैदान नहीं मेरी पीठ है। नीचे उतरो।'' ''तुम मेरे साथ क्यों नहीं खेलती हो ?''

''मैं अभी जंगल से चरकर आई हूँ। सुबह से चल चलकर थक गई हूँ। मुझे कुछ देर आराम करने दो।'' चिंकू बोली फिर भी बंकी ने उसे चैन से नहीं बैठने दिया। कभी उसकी पीठ पर तो कभी पूँछ खींचकर सताता रहा। चिंकू उससे बहुत परेशान रहती। उसे थोड़ी देर राहत तब मिलती जब रोनी शाम को शाला से घर आकर उसे अपने साथ खेलने के लिए ले जाता। चिंकू चाहती थी रोनी उसे इस बाड़े से हटा कर कहीं और रख दे लेकिन रामू जानता था बंकी चिंकू के साथ सुरक्षित रहेगा। चिंकू उसकी शरारतों से तंग आकर उससे छुटकारा पाने के उपाय ढूँढ़ती रहती। एक दो बार उसने उसे अपने पैने सींग से दूर खदेड़ दिया था। वह थोड़ी देर उसे देखकर डरा लेकिन थोड़ी देर बाद फिर उसके निकट आकर शैतानियाँ करने लगा।

रामू और रोनी इस बात से अनभिज्ञ थे। चिंकू को चैन तभी मिलता जब रात में वह आराम करने चला जाता। अच्छे खान-पान से बंकी की सेहत अच्छी हो गई थी। देखने में भी वह बहुत सुंदर था। उसका चिट्टा सफेद रंग दूर से ही नजर आ जाता। आकाश में घूमने वाली मिली चील की नजर लगातार उस पर लगी रहती। वह कई दिनों से उसे अपना शिकार बनाना चाह रही थी लेकिन उसे अवसर ही हाथ नहीं लगा।

एक दिन दोपहर में बंकी चिंकू को तंग कर रहा था। वह बार-बार उसकी पीठ पर चढ़ जाता और उसके कान खींचता। यह देखकर चिंकू को गुस्सा आ गया और उसे सींग से दूर तक खदेड़ दिया। वह बोली- ''खबरदार जो तुमने मुझे तंग किया। कितनी

बार कहा है दोपहर में मुझे चैन से रहने दिया करो लेकिन तुम्हारी समझ में बात नहीं आती है। कान खोल कर सुन लो मुझे भी दोपहर में आराम करना होता है। तुम रोनी के साथ खेला करो जो तुम्हें यहाँ लेकर आया है। जब से आए हो मेरा जीना हराम कर रखा है।'' चिंकू के गुस्से को देखकर बंकी डर गया और चुपचाप एक किनारे जाकर बैठ गया। मिली चील को इसी अवसर की तलाश थी। उसने देखा चिंकू एक किनारे आराम कर रही है और बंकी दूसरे छोर पर चुपचाप बैठा है। उसने आव देखा न ताव और झट से उस पर धावा बोल दिया। बंकी इस हमले के लिए तैयार नहीं थी। उसे समझ नहीं आया अचानक क्या हो गया? मोटे तगड़े बंकी को उठाने में मिली को दिक्कत हो रही थी। उसके पंजों में फंसा बंकी जोर से चिल्लाया– ''बचाओ।''

यह सुनकर चिंकू के कान खड़े हो गए। वह तुरंत अपनी जगह से उठी और सीधे मिली पर अपनी सींग से हमला कर दिया। उसके हमले से लड़खड़ा कर वह जमीन पर आ गई लेकिन उसने अभी भी बंकी को नहीं छोड़ा था। चिंकू आक्रामक होकर उस पर

लगातार वार कर रही थी। अपने को बचाने के लिए मिली ने बंकी को छोड़ दिया। उसने भी गुस्से से चिंकू पर चोंच से हमला किया और उड़ गई। बंकू को अभी तक समझ नहीं आ रहा था कि यह अचानक क्या हो गया? मिली के उड़ते ही रिंकू उसके पास आकर प्यार से सहलाने लगी। ''तुम ठीक हो बंकी।''

''मैं ठीक हूँ। पता नहीं मिली चील कहाँ से आ गई? वह तो हमेशा आकाश में चक्कर लगाती रहती है।''

''उसकी नजरें भोजन के लिए जमीन पर लगी रहती है।''

''आज तुम न होती तो वह मुझे अपना शिकार बना लेता।''

''मेरे रहते कोई तुम्हें परेशान नहीं कर सकता।''

''तुम बहुत अच्छी हो चिंकू। मैं तुम्हें इतना परेशान करता था फिर भी तुमने आज मेरी जान बचाई है।''

''कैसी बातें करते हो बंकी? रोनी तुम्हें बहुत प्यार करता है। आज अगर तुम मिली का शिकार बन जाते तो उसे बड़ा दु:ख होता है। मैं किसी को दुखी नहीं देख सकती। तुम्हें भी और रोनी को भी।'' चिंकू बोली तो बंकी उसके निकट आ गया। ''मुझे क्षमा कर दो चिंकू। मैंने तुम्हें बहुत सताया है।''

''ऐसा नहीं करते। बच्चे छोटी–मोटी शरारत करते ही रहते हैं। मैंने तुम्हारी शरारत का कभी बुरा नहीं माना। बस मुझे थोड़ी देर आराम के लिए समय चाहिए होता है। सुबह से दोपहर तक चलते–चलते मैं भी थक जाती हूँ।''

''आगे से मैं इस बात का विशेष ध्यान रखूँगा।'' बंकी बोला। उसके बाद वे दोनों प्यार से बात करने लगे। अब वह उसे तंग नहीं करता उसके निकट बैठकर उससे ढ़ेर सारी बातें करता।

– चुक्खूवाला (उत्तराखंड)

पिन्नी का चश्मा

– इंद्रजीत कौशिक

पिन्नी गिलहरी एक नंबर की आलसी थी। बैठे–बैठे मजे से खाना और सोना उसे पसंद था। मेहनत के तो नाम से ही वह दूर भागती थी। ''आज कल मुझे आसपास की चीजें साफ नजर नहीं आती डॉक्टर साहब।'' नजर कमजोर हुई तो पिन्नी डॉक्टर शेर सिंह के पास जा पहुँची।

डॉक्टर ने उसकी आँखों की जाँच की। ''पिन्नी! तुम्हारी आँखें कमजोर हो गई हैं इसलिए तुम्हें चश्मा बनवाना पड़ेगा।''

डॉक्टर की बात सुनकर पिन्नी का चेहरा उतर गया। ''चश्मा? चश्मा कितने का बनेगा डॉक्टर साहब?'' उसने पूछा।

''कम से कम ५०० रुपये तो लगेंगे। डिजाइन वाला बनाना हो तो और भी ज्यादा लगेंगे।'' डॉक्टर ने चश्मे की कीमत बताई।

''ठीक है डॉक्टर साहब! अभी तो मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं जब होंगे तब मैं बनवा लूँगी।'' इतना कहकर ठन–ठन गोपाल पिन्नी गिलहरी वहाँ से खिसक ली।

कुछ कामकाज ना करने वाली पिन्नी के पास सचमुच पैसे नहीं थे। ''जिस प्रकार मूर्ख घर बनवाते हैं और समझदार उनमें रहते हैं। ठीक वैसे ही मूर्ख होते हैं वह जो पैसे खर्च करके चीज बनवाते हैं। मैं तो कुछ ऐसा करूँगी ताकि ढेले का भी खर्च न आए और काम भी बन जाए।'' पिन्नी मन ही मन सोच रही थी।

''मन में लड्डू खाना छोड़ो और चश्मा खरीदने का उपाय करो वरना तुम्हारी नजर अधिक कमजोर हो जाएगी।'' नन्ही चींटी ने पिन्नी से कहा।

''अरे नहीं रे मूर्ख! मैं कोई गधा थोड़े ही हूँ जो दिन भर मेहनत करती फिरूँ। तुम देखना, कल मेरे

पास चश्मा होगा वह भी मुफ्त का।'' पिन्नी ने कहते हुए अपनी पीठ थपथपाई।

''कहो मौसी! कैसो हो तुम?'' अगले ही पल पिन्नी पास की गली में रहने वाली चमचम चुहिया के यहाँ जा पहुँची।

''क्या बताऊँ बहन! आजकल मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहता। तुम कहो, तुम्हारे क्या हाल हैं?'' चमचम ने पिन्नी से कहा।

''मैं तो भली चंगी हूँ! तुम खुद ही देख लो।'' पिन्नी ने इधर-उधर नजरें दौड़ते हुए उत्तर दिया।

''तुम बैठो, मैं तुम्हारे लिए चाय नाश्ता लेकर आती हूँ।'' कहकर चमचम चुहिया किचन में चली गई तो पीछे से अवसर पाकर पिन्नी ने उसका एक चश्मा चुरा लिया और अपने बैग में रख लिया।

चाय-नाश्ता करने के बाद पिन्नी वहाँ से खिसक ली। घर आकर उसने चुराया हुआ चश्मा लगा लिया। थोड़ी देर बाद इसे किसी काम से बाजार जाना पड़ा।

चमचम चुहिया का नजर का चश्मा भला पिन्नी के क्या काम आता? जिस जगह बड़ा सा गड्ढा था, जिसमें कीचड़ भरा हुआ था। वह गलत चश्मे के कारण पिन्नी को थोड़ा दूर नजर आया। ''हाय मैं मरी, ओह।''

कीचड़ से भरे गड्ढे में गिरने के कारण पिन्नी की हड्डी पसली एक हो गई। उसे मन ही मन पछतावा हो रहा था कि वह न चमचम का चश्मा चुराकर पहनती और न उसकी यह हालत होती।

गिरती-पड़ती किसी तरह वह गड्ढे में से बाहर निकली तो बाहर उसे चमचम ढूँढ़ती हुई मिल गई। ''ठहर जा शैतान, चोर कहीं की। अभी तुम मजा चखाती हूँ।'' कहते हुए चुहिया उसके पीछे दौड़ी।

''मुझे क्षमा कर दो मौसी! आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगी।'' स्वयं को मार से बचाने के लिए पिन्नी ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

- बीकानेर (राजस्थान)

लघुकथा

पूर्णता के लिए

- संजीव कुमार 'आलोक'

काफी समय पहले की बात है। पानी के भरे घड़े के ऊपर रखी एक छोटी-सी कटोरी ने घड़े से शिकायत भरे लहजे में कहा- ''तुम प्रत्येक बर्तन को जो तुम्हारे पास आता है, अपने शीतल जल से भर देते हो। किसी को भी खाली नहीं लौटाते, परंतु मुझे कभी नहीं भरते, जबकि मैं सदा तुम्हारे साथ रहती हूँ। इतना पक्षपात तो तुम्हें शोभा नहीं देता।''

घड़े ने उस कटोरी की बात सुनकर बस मुस्कुरा दिया। घड़े की इस मुस्कुराहट से कटोरी आग-बबूला हो गया और क्रोधित होते हुए फिर घड़े से कहा- ''तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं बल्कि मेरी हँसी उड़ायी। यह अच्छी बात नहीं है।''

घड़े ने उसकी बात सुनकर फिर मुस्कुराते हुए शांत स्वर में कहा- ''मैं तुम्हारी हँसी नहीं उड़ायी और न ही मैं तुम्हारे साथ कोई पक्षपात कर रहा हूँ। मैं तो इस बात पर मुस्कुरा रहा था कि तुम भी देखते हो कि सभी बर्तन मेरे पास आकर विनीत भाव से झुकते हैं, जिससे मैं उन्हें अपने शीतल जल से भर देता हूँ। परन्तु तुम तो गर्व से चूर हमेशा मेरे सिर पर सवार रहती हो इसीलिए मैं तुम्हें भर नहीं पाता हूँ। यदि तुम भी नम्रता से जरा झुकना सीखो तो तुम भी कभी खाली नहीं रहोगी और न तुम्हें मुझसे कोई शिकायत रहेगी।''

- बाढ़ (बिहार)

गिर गई झोपड़ी

– रजनीकांत शुक्ल

अपने देश का सुदूर उत्तर पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश है। जिसकी सीमाएँ दक्षिण में असम दक्षिण पूर्व में नगालैंड पूर्व में म्यांमार पश्चिम में भूटान और उत्तर में तिब्बत से मिलती हैं। वर्ष १९६२ से पहले देश के इस भाग को नेफा यानि 'नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेन्सी' के नाम से जाना जाता था। कामेंग, सुबनगिरी, सिआंग, लोहित और तिरप नाम की नदियाँ यहाँ की पहाड़ियों को अलग-अलग घाटियों में बाँट देती हैं।

इसी राज्य के पूर्वी सियांग जिले के सिल्ले नामक स्थान पर उस दिन एक ऐसी घटना घट गई जिससे इस स्थान का नाम राष्ट्रीय पटल पर आ गया। वह वर्ष १९९९ के दिसम्बर महीने की २९ तारीख थी। जब लगभग पन्द्रह वर्ष का लड़का टाटोर पर्टिन अपने से बड़े पाँच अन्य स्थानीय लोगों के साथ शहद की खोज में जंगल की ओर जाने की तैयारी कर रहा था। उनमें से किसी ने वह स्थान देख रखा था जहाँ से उन्हें प्रयत्न करके छत्तों से ढेर सारा शहद मिल सकता था।

उस समय दिन के लगभग बारह बजे का समय हुआ था और वे तब अपनी मंजिल से करीब आधे रास्ते पर थे। तभी उनमें से किसी ने बातों-बातों में पूछ लिया ''आखिर हम शहद जमा कैसे करेंगे? हमने शहद के लिए बर्तन तो ले लिया मगर जरा यह तो बताओ कि मक्खियाँ हमें अपना इतनी मेहनत से जमा किया हुआ शहद कैसे ले लेने देंगी? उनको उनके छत्ते से दूर करने के लिए हमारे पास क्या उपाय है?''

उसकी यह बात सुनते ही सबको एकदम से साँप सूँघ गया क्योंकि वे अति उत्साह में इस उपाय को सचमुच में भूल गए थे। उन्हें आग जलाकर नीचे से धुँआ करना था जिससे मक्खियाँ अपने छत्ते से दूर हो जाती और वे आसानी से शहद तक पहुँच जाते।

अब क्या हो सकता है? सचमुच उसके बिना तो उनका शहद पा लेना असंभव था। वे सब कुछ क्षण के लिए रुक गए और इसका उपाय सोचने लगे।

तभी उनमें से एक बोला ''जब तुम्हारी नाई से सलाह नहीं थी तो बाल क्यों भिगो बैठे?''

इसे सुनकर दूसरा करने लगा ''आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?''

''यही कि जब पूरी तैयारी नहीं की थी तो यहाँ पर आ क्यों गए? चलो इस बार अब वापस लौट चलते हैं। अगली बार पूरी तैयारी के साथ आएँगे।''

''नहीं नहीं, जब आज आ गए हैं तो हम अब शहद लेकर ही वापस लौटेंगे अभी हमारे पास पूरा दिन पड़ा हुआ है। अभी किसी को धुँआ करके जलाने के लिए भूसा ले आने के लिए भेज दो। तब तक हम लोग

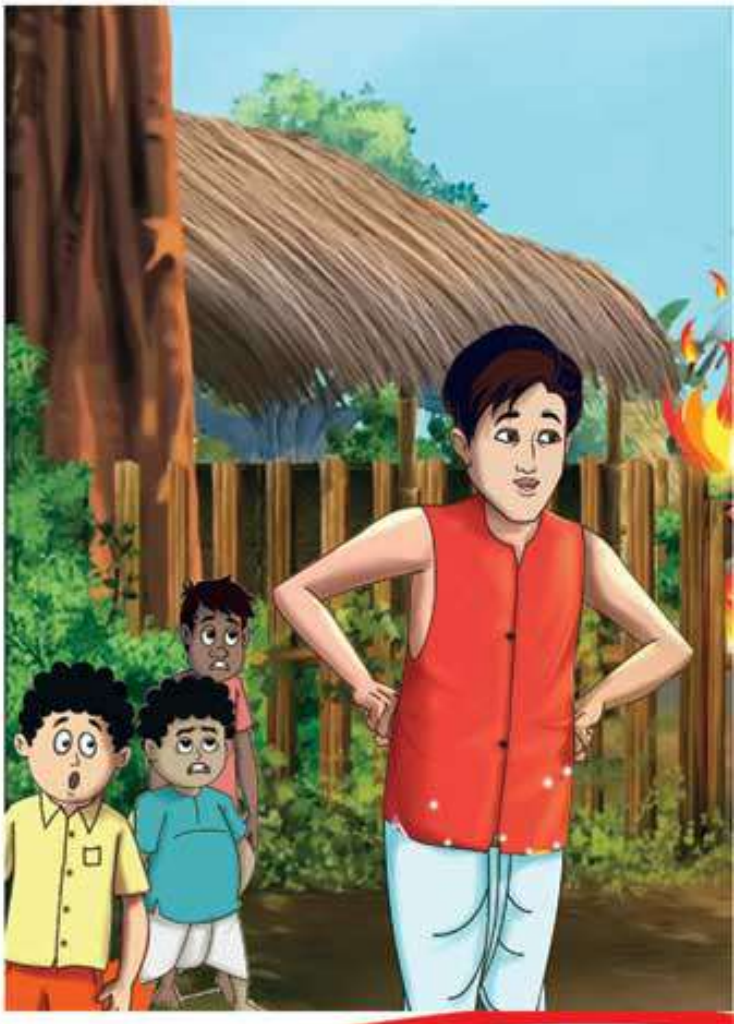

चलकर और दूसरी तैयारियाँ कर लेंगे।''

अब इस काम के लिए किसे भेजा जाए तो सबकी निगाहें समूह के सबसे छोटे सदस्य पर आ टिकीं। जब टाटोर पर्टिन ने सभी को अपनी ओर देखते हुए देखा तो उसे अपनी अहमियत का अंदाजा हुआ। उसे लगा कि आज का यह शहद प्राप्ति अभियान अब उसकी मदद के बिना तो पूरा न हो सकेगा। यह सोचकर उनका सिर गर्व से थोड़ा तन गया।

मगर प्रकट में वह बोला– देखो मैं इस काम के लिए ना नहीं कहता। मैं भूसा जरूर ले आऊँगा मगर देखो मैं अकेला नहीं जाऊँगा। आप में से किसी न किसी एक को मेरे साथ में चलना होगा। बोलो क्या कहते हो ?

बात तो सही थी टाटोर पर्टिन की।

टाटोर के भूसा लाने के लिए हामी भरने से

सभी के चेहरे पर चमक आ गई थी। वे एक–दूसरे की ओर देख ही रहे थे कि तभी उनमें से एक साथी टी बोजे ने खुशी–खुशी उसके साथ चलने के लिए कह दिया– ''मैं चलूँगा तुम्हारे साथ में....''

अपने मिलने की जगह बताने के बाद जहाँ बाकी साथी आगामी व्यवस्थाओं के लिए आगे बढ़ गए। वहीं टाटोर पर्टिन टी बोजे दोनों भूसे की खोज में वहाँ से वापस लौटने लगे। अब उन्हें शीघ्रता से भूसा लेकर अपने साथियों तक उल्टे पाँव लौटना था।

यही सोचते हुए वे तेजी से कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे कि तभी उनके कानों में कुछ बच्चों के रोने की आवाजें पड़ीं। ऐसा लग रहा था कि कहीं संकट में फँसे बच्चे मदद के लिए पुकार रहे हों। उन्होंने उन आवाजों के स्रोत की दिशा में बढ़कर देखने का प्रयास किया तो उन्हें एक झोपड़ी दिखाई दी जिसमें आग लगी हुई थी उन्होंने महसूस किया कि आवाजें उस झोपड़ी के अन्दर से आ रहीं थीं।

वे लगभग तेजी से दौड़ते हुए उसकी ओर भागे। टाटोर सबसे आगे था वह तेजी से उस झोपड़ी के अन्दर घुस गया। उसने देखा कि उसके अन्दर कुछ बच्चे थे जो रो रहे हैं। वे उस जलती आग की लपटों से इतना डर गए थे कि उनकी जलती झोपड़ी से बाहर निकल पाने की हिम्मत ही नहीं हो पा रही थी। टाटोर ने तुरन्त उनमें से एक साढ़े तीन वर्ष के लड़के को अपनी गोद में उठाया और दूसरे करीब छः वर्ष के बच्चे का हाथ पकड़ा और तेजी से आग की लपटों को चीरते हुए गेट की ओर बढ़ने लगा। उसने देखा कि उसका साथी टी बोजे भी उसके पीछे–पीछे ही झोपड़ी में घुस आया है। उसने भी चारों ओर नजर घुमाकर देखा तो एक कोने में एक साथ वर्ष का बच्चा डरा सहमा खड़ा था। टी बोजे ने आगे बढ़कर उसे पकड़ा और टाटोर के पीछे–पीछे आ गया।

आग की लपटें भयंकर रूप से बढ़ती जा रही थीं। उनका उस जलती झोपड़ी से बाहर निकलने का

रास्ता लगभग बन्द था। किन्तु किसी भी सूरत में उन्हें उस खतरे से बाहर निकलना था। टाटोर पर्टिन ने हिम्मत की और आग की परवाह न करते हुए उसके बीच से निकलते हुए बाहर की ओर छलांग लगा दी।

उसके पीछे-पीछे ही टी बोजे भी उस जलती आग से बाहर आ गया। अभी वे झोपड़ी से बाहर आए ही थे कि अपने पीछे उन्होंने एक जोरदार आवाज सुनी। उन्होंने पलटकर देखा तो उनके सारे शरीर में सिहरन दौड़ गई। वह झोपड़ी जिस शहतीर पर टिकी हुई थी वह पूरी झोपड़ी को लेती हुई एकदम से नीचे आ गिरी थी। अगर कुछ पल की और देर हुई होती तो.....

परन्तु वे अब पूरी तरह सुरक्षित थे। इस बीच कुछ लोग वहाँ आ पहुँचे थे जिन्होंने उन बच्चों के माता-पिता को सूचना दी और वे वहाँ आ गए। बच्चों को उनके हवाले किया गया। टाटोर पर्टिन ने अपार साहस का प्रदर्शन कर दो बच्चों की प्राण रक्षा की थी और टी बोजे को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था।

सभी ने टाटोर की हिम्मत की सराहना की और इस घटना का ब्यौरा राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए भेजा। टाटोर पर्टिन को वर्ष २००० का यह पुरस्कार देश के प्रधानमंत्री जी के हाथों वर्ष २००४ के गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को दिया गया।

नन्हे दोस्तो,

कूद पड़े हम आगे बढ़कर आग हो या हो पानी
हिम्मत है जब पास हमारे फिर कैसी हैरानी।
झूठ नहीं हम कहते तुमसे सबने ही यह जानी
एक नहीं दो नहीं हमारी सबकी यही कहानी।।

– नई दिल्ली

लघुकथा

मार्ग व भूल

– राजेन्द्र निशेश

बुद्धि ने मन को आवाज लगाई– ''रुक जाओ, आगे न बढ़ो! आगे का पथ अति दुर्गम है यह टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बुद्धि और विवेक के बिना नहीं लांघा जा सकता। उतावला-पन एवं शीघ्रता अच्छी नहीं आगे न बढ़ो।''

लेकिन मन ने अनसुना कर दिया एवं निरन्तर अग्रसर होता ही गया– बिना सोचे-विचारे या इधर-उधर देखे। दुर्गम-पथ ने उसको बेहाल कर दिया, राह में बिछे काँटे उसके शरीर को छलनी करते रहे। उसकी देह पीड़ा की परछाइयों के और निकट सिमटती गई– मानों पीड़ा ही पीड़ा रह गई हो उसके अंग-अंग में। उसके लिए आगे बढ़ना असम्भव हो गया। अन्ततः वह वहीं निढाल होकर पड़ गया।

कई दिन बीत गये। एक दिन बुद्धि भी वहीं आ पहुँची। उसने मन का बुरा हाल देखा तो उसकी सेवा में जुट गई। जब मन को होश आया तो उसे यह देखकर अति आश्चर्य हुआ कि बुद्धि के शरीर पर न तो किसी प्रकार की खरोंच थी और न ही कोई घाव। पर वह बुद्धि से इसका कारण पूछने का साहस नहीं जुटा पाया। आखिर, बुद्धि को कहना पड़ा– ''साथी! तुम्हारा बहुत बुरा हाल बना है। मैंने तुम्हें रुकने को कहा था, अगर रुक जाते तो यह हाल।''

मन बुद्धि की बात को काटता हुआ बोला– ''पर बुद्धि! मैंने तो तुम्हारी आवाज सुनी ही नहीं थी। अगर सुनता तो अवश्य ही रुक जाता।''

बुद्धि उसकी चंचलता पर मन्द ही मन्द मुस्कुरा दी।

– चण्डीगढ़

अनूठी वजह!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

तन मन स्वस्थ रहेंगे

– डॉ. श्रीकांत कोटिल्य,
जयपुर (राजस्थान)

भूल लगी थी जब कान्हा को,
खेत छोड़कर घर पर आया।
'भूत लदी माँ लोती दे दो',
तुतला-तुतला कर चिल्लाया।।

गन्दे हाथ तुम्हारे देखो,
पैरों पर भी धूल लगी है।
धूल-पसीना की कालिख-सी,
मुँह पर कैसी अलग जमी है।।

स्नान-गेह में चलो तुम्हारे,
हाथ-पैर-मुँह मैं धुलवाऊँ।
भूख बुझाने को थाली में,
रखकर भोजन तुम्हें कराऊँ।।

प्रेम वचन सुनकर माता के,
भूखा कान्हा भी मुसकाया।
और दौड़कर माँ से पहले,
नल-टोंटी पर कान्हा आया।।

भोजन के पहले क्यों धोते,
हाथ पैर माँ मुझे बताओ?
क्या विज्ञान छुपा है इसमें,
आज मुझे माँ ये समझाओ।।

दो कारण है इसके बेटे!
कान्हा की माँ ने समझाया।
वैज्ञानिक है एक, दूसरा,
आध्यात्मिक कारण बतलाया।।

हाथ-पैर पर पानी पड़ता,
अपनी भूख प्रखर हो जाती।
तेज भूख में भोजन करने से,
लम्बी आयु मिल जाती।।

अन्न-देवता कहते इसको,
तो पवित्र हाथों से छूना।
इसीलिए भोजन के पहले,
हाथ-पैर-मुँह अपने धोना।।

धोकर हाथ-पैर-मुँह उसके,
एक तौलिया से वह पोंछा।
बड़े प्रेम से थाल सजाकर,
भोजन का माँ ने तब सोंपा।।

भोजन मंत्र एक छोटा-सा,
माँ ने कान्हा से बुलवाया।
चबा-चबा कर उसी प्रेम से,
कान्हा ने फिर भोजन खाया।।

और अन्त में पानी पीना,
विष-समान माँ ने बतलाया।
दाँत-मसूड़े-उँगली से मल,
कुल्ला करना भी सिखलाया।।

इसी नियम से इसी तरह से,
भोजन हम सब नित्य करेंगे।
इतनी अच्छी बात समझकर,
तन से, मन से, स्वस्थ रहेंगे।

भोजन के पूर्व बोलिये

अन्न ग्रहण करने से पहले विचार मन में करना है।
किस हेतु से इस शरीर का रक्षण-पोषण करना है।
हे परमेश्वर! एक प्रार्थना नित्य तुम्हारे चरणों में,
लग जाए तन मन धन मेरा मातृभूमि की सेवा में।।

अनोखा जन्मदिन

– हरीशचंद्र पांडे

''दादाजी! कल मेरा जन्मदिन है। आपने कहा था ना कि, इस बार परीक्षा में हर विषय में अच्छे अंक मिले हैं, और खेल स्पर्धा में भी पदक मिला है। तो दादाजी।'' ''अरे! तुम तो हमेशा ही हर काम में आगे हो मेरे शेर।'' दादाजी ने नमन को पुचकारते हुए कहा।

''आपने मेरी पूरी बात तो सुनी ही नहीं।'' नमन दादाजी को कुछ खास बात कहना चाह रहा था।

''अरे! बोलो ना, मैं हर बात सुनने को तैयार हूँ।'' ''दादाजी! एक नया रेस्टोरेंट खुला है। हम दोनों और दादी अरे! माँ–पिताजी भी तो है। तो दादाजी हम सब वहाँ पर जाकर भोजन करें।'' ''अरे! इसकी जगह तुम एक साइकिल उपहार में ले लो।'' ''अरे वाह! साइकिल, वाह दादाजी! पर मेरा मन है रेस्टोरेंट में जाकर भोजन करने का।'' ''अरे! तो तुम तो हर रविवार को घर पर भोजन का आनंद लेते तो हो। पिछले रविवार को छोले भटूरे और गुलाब जामुन दही–बड़े सब बने थे ना। ''हाँ मैं मानता हूँ पर, दादाजी! रेस्टोरेंट का अलग ही मजा है, है कि नहीं?''

''नहीं बेटा! उसकी जगह तो घर से पकाकर ले जाओ और किसी हरी–भरी जगह में जाकर खाओ। उसका आनंद ही अनोखा है। और फिर आजकल जो रेस्टोरेंट में हम खाना खाने जा रहे है ना, वो कभी किसी जमाने में केवल भूखे–प्यासे बेघर यात्री के लिए ही थे... जो दूर–दराज से आए हुए यात्रियों की क्षुधा पूर्ति किया करते थे। एक तरह से देखा जाए तो केवल पेट भरना ही होती थी, वहाँ मनमर्जी से तो खाने की किसी की इच्छा तक न होती थी।

मगर अमन आज विज्ञापन की दुनिया ऐसी है

कि हर बात में रेस्टोरेंट जाना एक आधुनिक चलन ही होता जा रहा है। मानो वहाँ कुछ अलग ही होता है।

आज की चमक–दमक वाली जिंदगी ने सबको ये सिखा दिया है कि हर बात पर रेस्टोरेंट चले जाओ। बाकी कमी आजकल सोशल मीडिया ने ही पूरी कर दी है। लोग जरा–जरा–सी खुशी को घर पर मिल–जुलकर नहीं मनाते लेकिन रेस्टोरेंट जाते हैं और तुरंत उसकी चमचमाती तस्वीर भी सबको भड़काने के लिए डाल देते हैं।''

नमन गौर से सुन रहा था। दादाजी जरा रुककर आगे बोले– ''नमन! सबसे जरूरी है पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन करना और सहज होकर आराम से, किन्तु रेस्टोरेंट में एक टेबल पर किसी तरह असुविधा से भोजन खा लेना और वह भी इतना महंगा। तुमने पिछले रविवार को जो गुलाब–जामुन खाये पता है ना?'' ''दादाजी! बहुत अच्छे बने थे, तो मैंने कुल दस खाये। वे तुम्हारे लिए दस, गुलाब–जामुन केवल सौ रुपये में शुद्धता से तैयार हो गये। किन्तु रेस्टोरेंट में वह तीन सौ रुपये के आते।''

''है! अरे इतना महंगा।'' वही तो नमन, और शुद्धता का कोई अता–पता नहीं। साथ ही टमाटर मूली जो पाँच रुपये किलो हैं उसका जरा–सा सलाद पाँच सौ रुपये का।''

''अरे! दादाजी ये तो ठगी है।'' ''बिलकुल! नमन।'' और फिर हमको अगर मौज–मस्ती करनी है तो उसके लिए मैदान है, मेले हैं, पिकनिक है, पर रेस्टोरेंट हर बात में। उफ! नमन बेटे! यह तो मुझे समझ नहीं आता।''

''तो दादाजी! कल हम लोग रामलीला मैदान में मेले में चले!'' ''अरे.... बिलकुल। आज हम एक नई साईकिल खरीदने जा रहे हैं। और कल को नमन हम वहाँ जाकर जादू का खेल देखेंगे।'' ''वाह दादाजी! वाह!'' नमन खुशी से उछल पड़ा।

– हल्द्वानी (उत्तराखंड)

☺ छः अँगुल मुस्कान ☺

सरकारी कार्यालय में लगभग बारह बजे सभी कर्मचारी कुछ न कुछ कर रहे थे। कोई गा रहा था, कोई मेज बजा रहा था, कोई सीटी बजा रहा था। तभी एक अधिकारी ने कार्यालय में प्रवेश किया। वहाँ का वातावरण देखकर वह क्रोध से चिल्लाया ''क्या आप सबको इसी बात का वेतन मिलता है?''

''नहीं साहब, यह कार्यक्रम तो हम अपनी मर्जी से मुफ्त में दे रहे हैं।'' एक ने कहा।

*****

संदीप– अरे मित्र! आज तो मैं अपना बटुआ ही भूल आया। अवश्य वह नौकर के हाथ लग जायेगा।

रवि– लेकिन संदीप! तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारा नौकर ईमानदार है।

संदीप– तभी तो मुझे डर लग रहा है बटुआ पाते ही वह उसे मेरी पत्नी को पकड़ा देगा।

*****

जयदयाल जी रोज रात को सोने से पहले अपनी पत्नी को कहते, ''कल सुबह पाँच बजे तक नहाने के लिये पानी गरम हो जाना चाहिये वरना....।'' कहकर वह रुक जाते।

पत्नी रोज सुबह जल्दी ही उठ कर पानी गरम कर देती। एक दिन झुंझला कर वह कह बैठी, ''वरना क्या करोगे?''

''वरना मुझे ठंडे पानी से नहाना पड़ेगा।'' जयदयाल जी मुस्करा कर बोले।

छोटे राजू के बड़े सपने

– प्रगति त्रिपाठी

''ये क्या रामू! इतनी रात गए तू पढ़ाई कर रहा है? दिनभर के जी–तोड़ मेहनत के बाद भी तू थका नहीं?'' हरिया बोला।

''थकान तो बहुत है काका! लेकिन तुम तो जानते हो ना, मुझे पढ़ाई में कितनी रुचि है और होटल के दिनभर के काम करने के बाद मेरे पास यही समय मिलता है तो मैं पढ़ लेता हूँ। काका! इस समय मुझे बहुत अच्छा लगता है। वे औरतें क्या कहती हैं.... हाँ ''मी टाइम'' तो ये मेरा ''मी–टाइम है।'' हँसते हुए रामू ने कहा।

रामू की भोली बातें सुनकर हरिया खिलखिलाकर हँस पड़ा। ''बड़ा दुःख होता है रे तुझे ऐसे हाल में देखकर। मनोहर सेठ, तुझे पढ़ाई के नाम पर गाँव से शहर लेकर आया और पढ़ाई तो दूर तुझे नौकर बना रखा है।'' दुखी होते हुए हरिया ने कहा।

''अरे काका! इस समस्या का भी हल पढ़ाई ही है। वे नेता और बड़े लोग क्या कहते हैं 'पढ़ेगा भारत तभी तो बढ़ेगा भारत' इसलिए मैं पढ़ाई कर रहा हूँ। पता है कल जब मनोहर ताऊ ने मुझे राशन लाने भेजा था ना तो मैं उसी बहाने पास वाली शाला में जाकर मास्टर जी से मिल आया। एक वे है और एक तुम हो जो मुझे समझते हो। उन्हीं के कारण मुझे पढ़ने के लिए किताबें मिल जाती हैं और तुम मेरा हर काम में इतना साथ देते हो। मास्टर जी ने बताया मुझे कि अगर मैं परीक्षा में अच्छे अंक के आऊँगा तो सरकार मुझे छात्रवृत्ति देगी। जिससे मैं आगे की पढ़ाई सरलता से कर सकूँगा। भले ही मैं बड़ा आदमी ना बनूँ काका लेकिन पढ़–लिखकर कोई अच्छी नौकरी तो कर ही लूँगा और फिर मैं तुम्हें हमेशा अपने साथ रखूँगा।'' रामू ने कहा।

''अच्छा! तू पहले ये बता इतना छोटा होकर इतनी बड़ी–बड़ी बातें कहाँ से कर लेता है?''

''हा हा हा.... काका! तुम्हें तो पता है होटल में तरह–तरह के लोग आते हैं उनसे भी तो बहुत कुछ सीखने को मिलता है ना।''

दस साल के रामू के मुँह से इतनी बड़ी बात सुनकर हरिया गद्‌गद हो गया और बोला– ''तुझे तो बहुत सारे काम करने हैं लेकिन उसके लिए अपने स्वास्थ्य पर भी तो ध्यान देना पड़ेगा। चल अब सो जा, रात के एक बज रहे हैं। ना मैं पानी पीने उठता न तुझे पढ़ते देखता। सुबह भी तो तड़के ही उठना पड़ता है ना तुझे।'' हरिया ने प्यार से सर पर हाथ फेरते हुए बोला।

रामू सुनहरे भविष्य के अनगिनत सपने आँखों में बंद कर धीरे–धीरे नींद की गोद में चला गया।

– चूड़ासंद्रा (बैंगलूरू)

पुस्तक परिचय

हनुमान

मूल्य- २००/-
प्रकाशक-साहित्यागार
धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

भारतीय सांस्कृतिक पौराणिक गाथाओं में हनुमान बच्चों के लिए एक प्रेरक व आकर्षक चरित्र है। ही-मेन से हनुमान की ओर सांस्कृतिक दिशा परिवर्तन की दृष्टि से श्री उमेश कुमार चौरसिया का यह बाल उपंन्यास महत्वपूर्ण कृति है।

बच्चों के ७ रोचक उपन्यास

मूल्य- ३००/-
प्रकाशक-डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा. लि., X ३० ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-२, नई दिल्ली-११००२०

विख्यात बाल साहित्य सर्जक श्री प्रकाश 'मनु' जी की सात रोचक बाल उपन्यासों की यह संकलित पुस्तक साहित्य अकादमी के बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हुई है। बच्चों के ये उपन्यास और नटखटपन का मिला जुला स्वाद लेकर रचे गए है।

श्री प्रकाश मनु की ही दो और बाल कथा कृतियाँ

बच्चों की सदाबहार कहानियाँ

मूल्य- ३००/-

पुस्तक की भूमिका स्वरूप स्वयं मनु जी ने लंबी प्रस्तावना में इसे नई उमंगों और सपनों भरा आकाश कहा है। संग्रह की २४ कहानियाँ इस शीर्षक की स्वयं सार्थकता का प्रमाण है।

२१ वीं सदी की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ

मूल्य- ३००/-

इक्कीसवीं सदी के नए-नए अनुभवों से आपके बचपन की जिज्ञासाओं कुतूहलों को दिशा देती २३ मनभावन बाल कहानियाँ।

दोनों पुस्तकों के प्रकाशक हैं डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा. लि.) X ३० ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-२ नई दिल्ली-११००२०

नई दिशा

प्रकाशक-साहित्यागार
धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

सुप्रसिद्ध बालसाहित्यकार सुकीर्ति भटनागर की बालकों व किशोरों के मनोविज्ञान की अंगनाई में उतरी सर्दियों की उजली धूप जैसी सुहावनी है। ऊष्मा, ऊर्जा और प्रकाश बिखराती १२ रोचक कहानियाँ।

रवि लायटू का

विस्मयकारी भारत

बिहार के पूर्वी चंपारण ज़िले के अंतर्गत कैथवलिया में 125 एकड़ भूमि पर प्रस्तावित 500 करोड़ की लागत से महावीर मन्दिर ट्रस्ट द्वारा बनाये जाने वाले दुनिया में अपनी तरह के सबसे विशाल 'विराट रामायण मन्दिर' के निर्माण के लिए उसी इलाके के एक मुसलमान ज़मीदार इश्तियाक़ अहमद ख़ान ने ढाई करोड़ मूल्य की अपनी ऐसी ज़मीन इस ट्रस्ट को दान दे दी जिसके बिना यह योजना पता नहीं कब तक अधर में लटकी रह जाती।

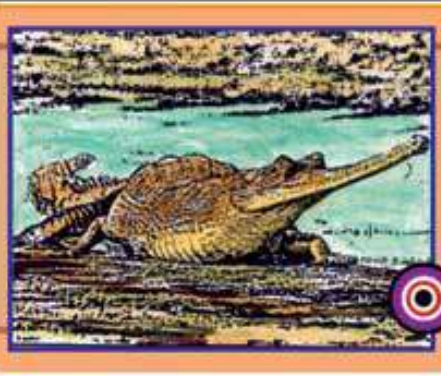

घड़ियाल, जो मगरमच्छ की जीवित प्रजातियों में सबसे लम्बा (6 मीटर तक) होता है, केवल भारत में ही बहुतायत से पाया जाता है।

गुजरात प्रान्त के राजकोट निवासी 17 वर्षीय स्मित चंगेला एक असाध्य रोग से पीड़ित हैं जिसमें उनके हाथ-पैरों ने उनका साथ देना बन्द कर दिया है।

ऐसे में निराश-हताश हो परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देने की जगह ये पढ़ाई के साथ-साथ अपनी नाक से दक्षतापूर्वक टाइप करके न केवल सफल ऑनलाइन बिज़नेस चला रहे हैं बल्कि समाज को यह संदेश भी दे रहे हैं कि जज़्बा हो तो कोई बाधा आगे बढ़ने में बाधक नहीं हो सकती।

कवीन्द्र रवींद्रनाथ टैगोर ने 70 वर्ष की आयु में चित्रकला की शुरुआत की थी और केवल दस वर्ष की अवधि में उन्होंने 3000 से अधिक चित्रों की रचना कर दी थी।

दुनिया के सर्वदा आबाद रहने वाले प्राचीनतम शहरों में बनारस सबसे प्रमुख है जो 5000 वर्षों से भी पुराना है।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

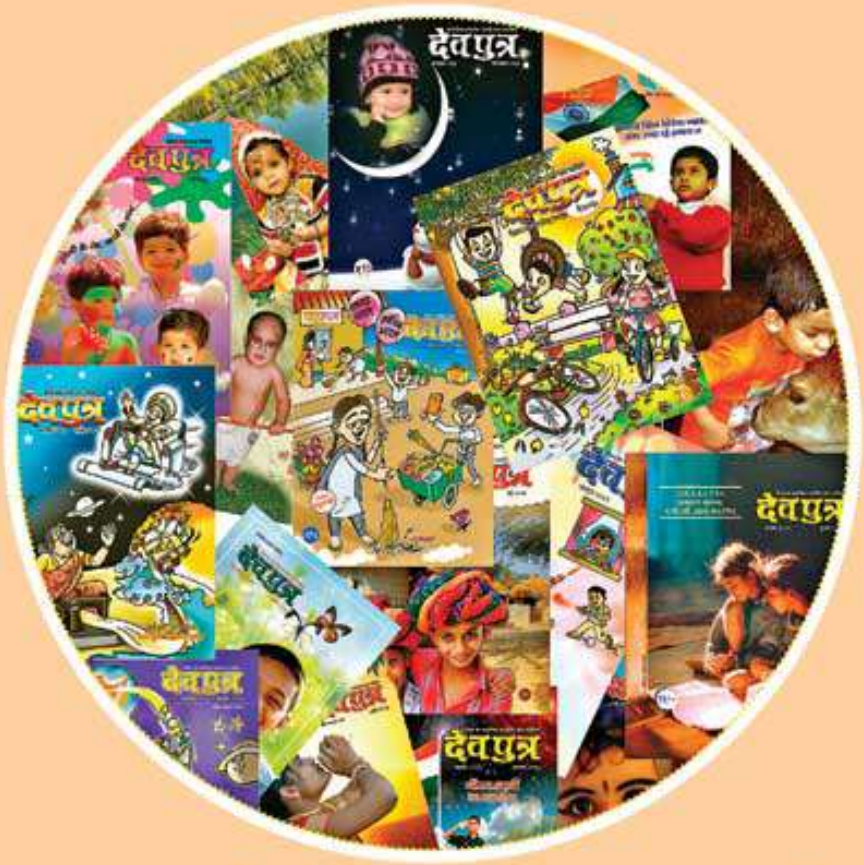

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना